

सिंहदरबारमे राष्ट्रिय विकाश समस्या समाधान समितिक बैसार

काठमाण्डू ।

देश समग्र आर्थिक परिसूचकके अवस्था, विद्यमान आयोजनाके प्रगति, समस्या आ समाधानक उपायबारे बातचित करबाक लेल राष्ट्रिय विकाश समस्या समाधान समितिक ५३ औं बैसार सिंहदरबारमे शुरु भेल अइछ । प्रधानमन्त्री केपी शर्मा ओलीक अध्यक्षतामे प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्के कार्यालयमे जारी बैसारमे राष्ट्रिय गौरवके आयोजना आ आयोजनाक विद्यमान समस्या तथा तकर कारण आ समाधानक उपायबारे बातचित करबाक लेल विभिन्न १५ कार्यसूची राखल गेल अइछ । उक्त कार्यसूचीमे शासकीय सुधार, राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त आयोजनामे वन क्षेत्क उपयोग,

आयोजना बैंक, सार्वजनिक खरिद, प्रयोजनक लेल जिला दुररेट, बालसुधार गृह सञ्चालन तथा सडक बालबालिका मुक्त अभियान, सङ्घ, प्रदेश आ स्थानीय तहमे सरकारी भवन, समपूरक अनुदान, सोह्रम् आयोजनाक कार्यान्वयन योजना, आयोजनाक बहुवर्षीय ठेक्का व्यवस्थापन, विद्युत् महसुल सङ्कलन विनियमावली, अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा, सार्वजनिक सेवामे इन्टर्नसिप, विपद् उत्थानशील पूर्वाधार निर्माण, विपद्के बाद पुनःनिर्माण तथा पुनःस्थापना अइछ । बैसारमे राष्ट्रिय योजना आयोगके उपाध्यक्ष प्रा डा शिवराज अधिकारी समष्टीगत आर्थिक परिसूचकके अवस्था आ प्रवृत्ति,

सरकारक सार्वजनिक वित्त परिचालनके अवस्था, सङ्घीयताबाद चालु आर्थिक वर्षधैरके आर्थिक सामाजिक प्रगति स्थिति, प्रदेशसभके समष्टीगत आर्थिक अवस्था, चालु आर्थिक वर्षक प्रगति स्थिति, अइसँ पहिने विकास समस्या समाधान समितिक बैसारके निर्णयके कार्यान्वयन स्थितिलगायत विषयमे प्रस्तुत कएने अइछ । बैठकमे उपप्रधानमन्त्री एवं अर्थमन्त्री विष्णुप्रसाद पौडेल, मन्त्रीगण, प्रदेश सरकारक मुख्यमन्त्रीसभ, प्रधानमन्त्रीक मुख्य सल्लाहकार, सरकारक मुख्यसचिव, प्रधानसेनापति, सङ्घ आ प्रदेश सरकारक सचिवसभलगायत सहभागी छइथ ।

विद्युत् निर्यातसँ आर्थिक समृद्धिमे योगदान हेबाक अध्यक्ष दाहालके विश्वास

काठमाण्डू ।

नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी (माओवादी केन्द्र)क अध्यक्ष एवं पूर्वप्रधानमन्त्री पुष्पकमल दाहाल ‘प्रचण्ड’ विद्युत् निर्यात वृद्धि भेलासँ देशक आर्थिक समृद्धिमे महत्वपूर्ण योगदान पहुँचबाक विश्वास व्यक्त केने अइछ ।

पहिलबेर नेपालसँ बङ्गलादेशमे

विद्युत् निर्यात भ रहल खबरसँ प्रसन्न छी, जेठमे प्रधानमन्त्रीक रुपमे भारत भ्रमणके क्रममे नेपालसँ बङ्गलादेशमे विद्युत् निर्यात करबाक लेल भारत सरकार सहमत भेल बतौलैन ।

नेपाल विद्युत् प्राधिकरण आइ ४० मेगावाट बिजुली बङ्गलादेश

निर्यात केने अइछ । विद्युत् व्यापार इतिहासमे नेपालके बिजुली भारतबाद तेसर देश पहुँचल अइछ । भारतके केन्द्रीय विद्युत् नियमन आयोग नेपालक बिजुली बङ्गलादेश निर्यात करबाक अनुमति देलाक बाद शुक्रदिन प्राधिकरण विद्युत् निर्यात केने अइछ ।

कूटनीतिक सम्बन्ध मजबुत बनेबाक लेल

‘कन्सर्ट’ आयोजन क रहल

काठमाण्डू ।

नेपाल, जापान आ दक्षिण कोरियाक कलाकार संयुक्त रुपमे ‘के पप टुर इन नेपाल’ म्युजिकल कन्सर्ट आयोजन क रहल अइछ । ‘ग्राण्ड च्यारिट नेपाल’द्वारा डिसेम्बर २० आ २१ तारिखमे होटल हायातमे कन्नसट आयोजन हएत । कार्यक्रममे

जापान, दक्षिण कोरिया आ नेपालक कलाकार सांस्कृतिक कार्यक्रममे प्रस्तुति देबाक ग्राण्ड च्यारिट नेपालक अध्यक्ष विश्वमित्र सुवेदी बतौलैन । ‘तीन देशक कूटनीतिक सम्बन्ध मजबुत बनेबाक लेल साङ्गीतिक कार्यक्रम आयोजन करए लागल छी,’ ओ कहलैन, ‘कला आ संस्कृति सम्बन्ध प्रगाढ़ होइछ

मान्यता स्थापित करए चाहै छी ।’ हुनका अनुसार कोरिया तथा जापानक केल्ट नाइन वी, बस्टर्च युप, डस्टिन युप, लभ वन युप, ‘सामुराई’ ब्याण्डके कलाकार प्रस्तुति देत । नेपालसँ कुटुम्ब ब्याण्डके सङे गायक दीपक बज्राचार्य आ नेपाल आइडल करण परियारके प्रस्तुति रहत ।

ठगी करएबला तीन गोटे पकड़ाएल

काठमाण्डू ।

वैदेशिक रोजगारमे आकर्षक तलबके लोभ द विभिन्न देशमे पहुँचा देब कहिक रुपैयाँ ठगी अभियोगमे तीन गोठोकें पकड़ने अइछ । काठमाण्डू अपराध अनुसन्धान कार्यालयक टोली सोलुखुम्बुके नेचासल्यान गाउँपालिका–३ के २२ वर्षीय प्रतिका बास्तोला, भरतपुर

महानगरपालिका–१० के ३६ वर्षीय शारदा सुवेदी आ भरतपुर महानगरपालिका–४ के २५ वर्षीय सुरज कँडेलकेँ नियन्त्रणमे लेने अइछ । प्रतिका युनाइटेड अरब इमिरेट्स (युएई) के दुबई लेल एक गोटेसँ रु दु लाख तथा शारदा आ सुरज संयुक्त अधिराज्य बेलायतके लेल दु गोटेसँ रु एक–एक लाख ल

सम्पर्कविहीन भेल पीडितक उपरागके आधारमे हुनकासभकेँ नियन्त्रणमे लेने कार्यालयक प्रहरी उपरीक्षक काजीकुमार आचार्य जानकारी देलैन । तीनुगोटेकेँ आवश्यक अनुसन्धान तथा कारबाही लेल वैदेशिक रोजगार विभाग ताहाचलमे पठाएल गेल अइछ ।

गुरु नानक आइयो ओतबेक सान्दर्भिक छइथ: उपराष्ट्रपति

काठमाण्डू ।

उपराष्ट्रपति रामसहायप्रसाद यादव शिख धर्मक प्रवर्द्धक गुरु नानक देव मानवकेँ ‘अपन भितर ईश्वर तकबाक, परिश्रम तथा भोजन एकदोसरकेँ बाइटक खेबाक लेल’ देने सन्देश आइयो ओतबेक सान्दर्भिक आ महत्त्वपूर्ण रहल विचार व्यक्त केलैन अइछ ।

गुरुनानक जयन्ती, २०८१ के अवसरमे आइ शुभकामना दैत उपराष्ट्रपति यादव विद्यमान सबकिसिमके वि्कृति, विसङ्गति आ विभेदके अन्त क समतामूलक, शान्त, सौम्य, सभ्य आ सुसंस्कृत समाजक निर्माणमे दत्तचित्त भ सक्रिय रहबाक लेल आजुक दिन सबकेँ उत्प्रेरित करबाक विश्वास व्यक्त केलैन ।

गुरु नानकके उपदेशकेँ जीवनमे आत्मसात् करैत

राष्ट्रिय एकता, परस्पर प्रेम, भ्रातृत्व आ शान्तिक भावना कायम करबाक हठ सङ्कल्पसँ जीवनमे परिवर्तन अनबाक बात जोड़ दैत ओ अइ जयन्तीसँ सत्य, करुणा आ सेवाभावकेँ प्रेरणा प्रदान करबाक विश्वास व्यक्त केलैन । उपराष्ट्रपति यादव स्वदेश तथा विदेशके सम्पूर्ण शिख समुदायमे सुख, शान्ति आ सु–स्वास्थ्य कामना सेहो केलैन अइछ ।

प्रत्येक साल कात्तिक शुक्ल पूर्णिमाक दिन शिख धर्मावलम्बीक गुरु नानक जयन्ती मनाएल जाइछै ।

गुरु नानक देवके स्मरणमे आइ गुरुद्वारामे श्रद्धा आ भक्ति भावसँ कीर्तन तथा दीप प्रज्जलितलगायतके कार्यक्रम आयोजन कएल गेल अइछ ।

चालिस मेगावाट बिजुली बङ्गलादेश निर्यात भ रहल

काठमाण्डू ।

नेपाल विद्युत् प्राधिकरण शुक्रदिन ४० मेगावाट बिजुली बङ्गलादेशकेँ निर्यात करबाक भेल अइछ । विद्युत् व्यापारके नेपाली इतिहासमे भारतके बाद पहिलबेर तेसर देशकेँ बिजुली पहुँचाएब लागल अइछ । प्राधिकरणके प्रवक्ता चन्दनकुमार घोष क्षेत्रीय विद्युत् व्यापारमे ऐतिहासिक क्षण छी, राससकेँ प्रतिक्रिया देलैन । भारतके केन्द्रीय विद्युत् नियमन आयोग नेपालके

बिजुली बङ्गलादेश निर्यात करबाक अनुमति देलाक बाद शुक्रदिन प्राधिकरण दुपहर विद्युत् निर्यात करबत । विद्युत् व्यापार करबाक विषयमे आसिन १७ गते नेपाल, भारत आ बङ्गलादेशक उच्च अधिकारीबीच त्रिपक्षीय सम्झौता भेल छल । सम्झौतामे नेपालसँ प्राधिकरणक कार्यकारी निर्देशक कुलमान घिसिङ हस्ताक्षर केने छलैथ । सम्झौताअनुसार हरेक वर्षके १५ जुनसँ १५ नोभेम्बरधैर विद्युत् बङ्गलादेश निर्यात हएत ।

प्राधिकरण ढल्केबर–मुजफ्फरपुर अन्तरदेशीय लाइनमार्फत भारतीय बिजुली उपलब्ध कराएत । उक्त बिजुली भारतीय नोडल एजेन्सी एनभिभीएन अपन प्रसारण प्रणालीमार्फत बङ्गलादेश पहुँचाएत । सहमतिअनुसार मुजफ्फपुरसँ भारतीय प्रसारण प्रणाली होइत बहरामपुर भेरमारा चाइर सओ केभी प्रसारण लाइनसँ नेपाली बिजुली बङ्गलादेश पहुँचत ।

प्राधिकरण प्रतियुनिट आठ रुपैयाँ ६४ पैसामे बिजुली निर्यात करबाक जनौलक अइछ । प्रवक्ता घोषके अनुसार प्राधिकरण २५ मेगावाट क्षमताक लिश्ली आ २२ मेगावाट क्षमताक चिलिमे जलविद्युत् आयोजनासँ उत्पादित बिजुली बङ्गलादेशके देत । तहिना, बङ्गलादेश सन् २०४० धैर नेपालसँ नौ हजार मेगावाट बिजुली लेबाक अहिसँ पहिने घोषणा क चुकल अइछ । सरकार सन् २०३५ धैर निर्धारण केने

कार्ययोजनामे २८ हजार पाँच सओ मेगावाट बिजुली उत्पादन करबाक लक्ष्य राखने अइछ । जइमे १३ हजार मेगावाट आन्तरिक खपत हेत आ १५ हजार मेगावाट भारत तथा बङ्गलादेशकेँ निर्यात करबाक रणनिति लेन अइछ । ‘नेपालक बिजुली बङ्गलादेश निर्यात हेब अपनेमे महत्वपूर्ण आ ऐतिहासिक परिघटना छी,’ प्राधिकरणक प्रवक्ता घोषले कहलैन, “लम्बा समयक मेहनतके परिणाम भेटल अइछ ।”

भाएबहिनके प्रेमक प्रतीक सामाचखेवा पावैन आइ समापन होइत

महोत्तरी ।

महोत्तरीसहित पूरा मिथिलामे भाएबहिनके प्रेम देखेबाक पावैन सामाचखेवा आइ समापन भ रहल अइछ ।

कार्तिक शुक्ल पञ्चमीक दिन शुरु भेल ई पावैन पूर्णिमामे समाप्त हेबाक परम्परा अइछ । ई पावैन के अंत में मिथिलानीसब सामा खेल में सतभैया, हात्ती, वृन्दावन, चुगला, सामा आ चखेवाके माटिक आकृति भाएसँ फुटाए क जोतल खेत वा निर्जन वनमे गाड़बाक प्रचलन अइछ । पावैन समापनमे बहिन भाएकेँ दीर्घायुके कामना करैत स्वादिष्ट पकवान दैत छइथ । भाएसभ सेहो गच्छल अनुसार वस्त्र आ नगद दक्षिणा देल करैत अइछ ।

सामाचखेवा पावैनके ११ दिन मिथिलामे बहिन अपन भाएके सौर्यक वर्णन करैत गीत गाबल जाइत अइछ । बोलचालमे ‘सामा खेल’ सेहो कहल जाइछै । पावैनके ११ दिन मध्य राइतधैर चौबाटियापर महिलासभ जमा भ क भाएके पराक्रमके वर्णन करैत चुगलाके सराप दैत गीत गाबैत मनाएल जाइत छै । गीतमार्फत बहिनके प्रेम आ समर्पण



भाव अपनासभके मनोवल सदैव उच्च रहबाक मैथिल युवा भङ्गाहा–४ रामनगरक ३० वर्षीय रामईश्वर ठाकुर कहलैन । सामाचखेवा करिब साढ़े७ पाँचहजार वर्ष पहिने द्वापर युगसँ प्रारम्भ भेल मानल जाइत अइछ । द्वापर युगमे श्रीकृष्णके बेटी सामा चक्रधरसँ प्रेम

भेलाक कारणेँ चुगला कृष्णकेँ विभिन्न आरोप सुनाबैत बेटीके चरित हत्याके प्रयास कएलक । जइमे सामाके पन्छी बइन जेबाक श्राप देल पौराणीक कथा अइछ । श्रीकृष्णके श्रापसँ पन्छी बनल सामा आ प्रेमी चखेवाक मुक्ति लेल कृष्ण पुत्र सामाक भाए साम्ब शिवजीके तपस्या क

सामाचखेवाके श्रापमुक्त केने वर्णन पुराणमे भेटैत अइछ । भाए साम्बके वएह गुणकेँ स्मरण करैत सामाद्वारा गाएल गीतके यादमे अपन भाए प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत सामाचखेवा पावैनके परम्परा रहल मिथिला लोकपरम्पराक जानकार सहप्राध्यापक ध्रुव राय बतौलैन ।

कोप–२९ मे सहभागी राष्ट्रपति भ स्वदेश फिर्ता



काठमाण्डू ।

राष्ट्रपति रामचन्द्र पौडेल अजरबैजानक राजधानी बाकुमे आयोजित जलवायु परिवर्तनसम्बन्धी संयुक्त राष्ट्रसङ्घीय सम्मेलन (कोप–२९) मे सहभागी भ आइ भोर स्वदेश फिर्ता आएल छइथ । त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलके अतिविशिष्ट कक्षमे हुनका उपराष्ट्रपति रामसहायप्रसाद यादव, प्रधानमन्त्री केपी शर्मा ओली, सभामुख देवराज घिमिरे, राष्ट्रियसभक अध्यक्ष नारायणप्रसाद दाहाल, गृहमन्त्री

रमेश लेखक स्वागत केलैन ।

राष्ट्रपतिक स्वागत लेल मन्त्री, सरकारक उच्च पदस्थ अधिकृत तथा सुरक्षा निकायक प्रमुख विमानस्थलमे उपस्थित छलैथ ।

नेपाली सेनाक एक टुकडी राष्ट्रपतिकेँ सम्मानगारतसँ सम्मान केने छल । राष्ट्रपति पौडेल अजरबैजानके अपन समकक्षी इलहम अलियेभके निमन्त्रणमे सम्मेलनमे सहभागी होबाक लेल कात्तिक २५ गते बाकुदिस प्रस्थान केने छलाह ।

राष्ट्रपति पौडेलक सङ प्रथम महिला सविता पौडेल, राष्ट्रपतिक जल तथा वातावरणविज्ञ डा. परमेश्वर पोखरेल, राष्ट्रपति कार्यालयक सचिव नाराणप्रसाद शर्मा, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद् कार्यालयक सचिव कृष्णहरि पुष्कर, राष्ट्रपतिक प्रमुख स्वकीय सचिव अवज्ञा पौडेल, परराष्ट्र मन्त्रालयक सहसचिव अमृतबहादुर राई, राष्ट्रिय समाचार समिति (रासस)क कार्यकारी अध्यक्ष धर्मेन्द्र झा, राष्ट्रपतिक सञ्चारविज्ञ किरणकुमार पोखरेल सेहो स्वदेश आएल छैथ ।



मानव सम्वेदनाको गहकिला पक्ष समेटिएको ‘सामा चकेवा’



‘सामचे सामचके आबिहे हो, जोतला खेतमे बैठिए हो, सब रङ पटिया ओछाइहियै हो, तै पटियामे के-के सुते, छोटे बरहे लादहैन सुते’

यतिबेला बेलुका रातिको समय यस्ता गीतले मधेशको गाउँ-शहर यस्तै गीतले गाउँबस्ती मन्त्रमुग्ध छन् । मधेशको महापर्व छठ सक्रिएसँगै यस क्षेत्रमा समाचकेवाको यी र यस्तै गीतले गाउँबस्ती रोमाञ्चकता भरिएको छ । सामाचकेवा पर्वलाई यहाँका आदिवासीसँगै मधेसी समुदायले पनि उत्तिकै आस्था र उत्साहका साथ मनाउँछन् । दिदीबहिनीहरूले दाजुभाइको दीर्घायूको कामना गर्दै समाचकेवा पर्व मनाउँछन् । मधेसको गाउँबस्तीमा बाँसको नाङ्लोमा काँचो माटोबाट विभिन्न आकारका मूर्तिहरू बनाइएका छन् । जसमा समाचकेवा, चुगला, बिरदाबनी, मौहौतियाःमालिन, कुत्ता, नाह खेबैया, तितिर (समाको साथी), नटुवा, न्याकदी भलाजी, ढोलकियाःझाइल बजिया र भमरा राखेर समाचकेवा खेलिरहेका छन् । र यी सबै माटोको आकृति दिदिभाईबीचको अगाध प्रेम, सप्रेम, माया र सदभावलाई दर्शाउने गर्दछन् । दिदी-बहिनीद्वारा दाजुभाइको दीर्घायु, आरोग्य र ऐश्वर्य प्राप्तिको कामना गरिने पर्व हो, सामा चकेवा । दाजुभाइ र दिदीबहिनीका बीचको अगाध एवं स्नेही सम्बन्ध अभिव्यक्त गर्ने पर्वको रूपमा समेत सामा चकेवालाई लिने गरिन्छ । मिथिलाञ्चलमा मनाइने तीनवटा लोकोत्सव प्रत्येक साल उत्साह एवं उमंगसहित सामा चकेवालाई समेत मनाइन्छ । मिथिलाञ्चलमा भाईबहिनबीचको सम्बन्धलाई दर्शाउने मुख्यगरी तीनवटा पर्व मनाइने गरिन्छ । रक्षा बन्धनबाट सुरु भई भैयादुज, भ्रतृद्वितीया(भर-दूतीया) हुँदै सामा चकेवामा गएर समापन हुन्छ । कार्तिक शुक्ल पक्षको द्वितीयादेखि पूर्णिमासम्म यो पर्व मनाइन्छ । सुरु भएको दिनदेखि पूर्णिमाको दिन विशेष छोरिबेटीलाई बिदाइ गर्ने सरह नै यस पर्वमा बनाइएको माटो मूर्तिलाई बिदाइ गरिन्छ । द्वितीया तिथिका दिन दिदीबहिनीले सामा चकेवा पर्वका लागि माटोको आकृति बनाउने कार्यको शुभारम्भ गरी छठ पर्वको खरना वा पारणदेखि पात्रहरूको आकृति बनाउने कार्यलाई तीव्रता दिइन्छ । मिथिलाञ्चलको प्राचीन सामाजिक, पारिवारिक संस्कार र परम्परालाई इङ्गित गर्ने यो पर्व लोकनाट्यको एउटा रूप हो, जसमा महिला सूत्रधार र पात्रमा माटोका मानव, पशु र चराको आकृति हुन्छन् । जुन मैथिल समाजमा भइरहेको यथार्थ पारिवारिक कथालाई समेट्ने गर्दछ । मानवीय

संवेदनाका गहकिला पक्ष समेट्दै मौखिक परम्परामा जीवित रहँदै आजसम्म जीवन्त प्रस्तुति भइरहेको सामा चकेवा पर्व विशिष्ट सांस्कृतिक सम्पदा रहेको छ । जसमा दाजुभाइ दिदी-बहिनीको प्रेम मुख्य आधार भएको यस पर्वले भाइ-बहिनी र पति-पत्नीको अमर प्रेम, समर्पण, उत्सर्ग र श्रद्धा प्रदर्शित गरिन्छ । ‘सामा’ स्त्री पात्र र ‘चकेवा’ पुरुष पात्र हुन् । दुइटैलाई चराका रूपमा माटोको बनाइएको हुन्छ । त्यस्तै अन्य पात्र पनि माटोकै बनाइन्छ । यस पर्वमा माटोबाट सामा चकेवा, चुगला, ढोलिया, भरिया, सतभैया अर्थात् सप्तऋषि, खज्जनचिडैया, वनतीतर, झाँझी कुत्ता, भैया बटतकनी, मलिनियाँ र वृन्दावनलगायतका पात्र बनाइन्छ । सांस्कृतिक विद् रामदयाल राकेशद्वारा लिखित पुस्तकमा यसमा ‘सतभैया’ (सप्तऋषि) को प्रतीकका रूपमा सम्मानित हुन्छ र बहिनी (दुईचार वटा विपरीत दिशामा मुख भएको जुन साम्ब र सामाको प्रतीक हुन्छ आदिको मृण्मय मूर्ति बनाइन्छ तर चुगलाको मूर्ति



शिव अधिकारी यदुवंशी



माटोबाट नबनाएर सिक्की भने मिथिलाञ्चलमा सहज रूपमा प्राप्त खरको जरातिर माटोले पूरै छोपेर बनाइएको झाडजस्तै (वृन्दावनको प्रतीक), यसको दुवैतिर लामो-लामो जुँगा भएको जुट (सनपाट) बाट माटोको मानवाकृति भएको चुगला (कुरा लगाउने ढिहुली सहायकको प्रतीक बनाइन्छ) माटोको छोप्ने हुने पोती (भकारी) जसमा सामा चकेवाको खानका लागि चिउरा र गुँद राखिने उल्लेख छ । यी सबै मूर्तिहरू बनाएर त्यसलाई चामलको पिटाको झोलले पछि विभिन्न रङमा रंगाएर यसलाई सिँगारिन्छ । यी सबै मूर्तिलाई कोठी (माटोको सानो भकारी) माथि राखिन्छ । साँझ परेपछि प्रत्येक घरका

किशोरीहरू एउटा बाँसको नयाँ निर्मित दौरामा (टोकरी) टुकी बालेर एउटै झुण्डमा गीत गाउँदै आ-आफ्ना घरबाट निस्केर पूर्वनिर्धारित ठाउँमा एकत्रित भएर सामा चकेवाको लोकोत्सव संगीतमय र नृत्यमय वातावरणमा मनाउँछन् ।

‘डालाले बहार भेली, बहिनी से पलाँ बहिनी, फलाँ भैया लेल डाला छीन, सुनु गे राम सजनी ।’

सामा चकेवा पर्वमा माटोको आकृति बनाएर दिदी-बहिनीले मनोवाञ्छित फल प्राप्तिको कामना गर्दछन् । मूर्तिलाई चलायमान गरी संवादको आनन्द उठाउँछन् ।

डालामा राखिएका सबै माटोका मूर्तिहरू त्यति बेला जीवन्त भएर आउँछन्, जब महिला त्यसलाई पात्रका रूपमा उभ्याएर गीति संवाद बोल्छन् । ‘हसि-मजाक’ र ‘ठट्टा’ गर्दै स्थानीय चेलीबेटीले माटोको मूर्तिहरूलाई जीवन्त राखेको आभास गराउँछन् । मिथिला लोक पर्व एवं संस्कृतिमा उल्लेख भए अनुसार सामा चकेवाको प्रचलन मिथिलामा प्राचीन

कालदेखि नै रहेको पाइन्छ । यसको सर्वप्रथम चर्चा पद्मपुराणमा गरिएको जानकारी बताउँछन् । यो पूर्णरूपमा भाइबहिनीको प्रेममा आधारित छ । भाइको वीरता, उदारता र प्रशंसाको वर्णन, बहिनीको अदभूत भ्रातृत्व प्रेमको चित्रण, चुक्ली गर्नेहरूको प्रतीक चुगला प्रवृत्तिको निन्दा, सामाको ससुराल जाने प्रसंगको मार्मिक क्षणजस्ता गीति संवाद र अभिव्यक्तिको छोटो कथातत्व बोकेको गीति संरचना छ ।

स्कन्द पुराणमा सामा चकेवाको कथा सम्प्रसङ्ग उल्लेख गरिएको छ, जसअनुसार श्यामा (सामा) र चकेवा पति-पत्नी हुन् । श्यामाका पिता कृष्ण छन् भने पति चारुवक्य (चकेवा) । चारुवक्य आश्रममा बस्दथे । श्यामा आफ्ना पतिलाई भेट्न आश्रम गइरहँदा चुगलाले कृष्णकहाँ गई चुक्ली लगाए-श्यामा कुनै मुनिसँग प्रेम गरिन् र । कृष्ण रिसाएर श्राप दिई चरा बनाइदिए ।

भाइ शाम्बलाई जब यो थाहा भयो, उनी छटपटिन थाले । बुवासँग अनुनय विनय गरे । केही सीप लागेन । अनि तपस्या सुरु गरे । कार्तिक पूर्णिमाका दिन तपस्या पूर्ण भयो र वरदानमा बहिनी श्यामा (सामा)को पूर्वरूपमा पाए । त्यसैले बहिनीद्वारा भाइका लागि यो पर्व मनाउने गरिन्छ ।

चारुवक्य पत्नी वियोग सहन गर्न नसकेर तपस्याकै भरमा चकेवाका रूपमा चरा हुन पुगे । चरा भएकी पत्नी सामासँग बस्न थाले । त्यसै क्रममा उनीहरूको बास रहेको वृन्दावनमा विरोधीले आगो लगाए । उठीबास गर्न धेरै प्रयत्न गरे तर अन्ततः आफ्नो तपस्या र पराक्रमले उनीहरू पुनः मानवरूपमा अवतरण भएको आख्यान रहेको छ ।

यस पर्वमा मिथिलाञ्चलको पारिवारिक जीवन तथा लोक आस्थाको अटुट सम्बन्ध देखिन्छ । मानव मात्र हैन, घर परिवारमा रहने चरा, झाँझी कुत्ता, वनतितर र जंगली जीवनको अदभूत समन्वय रूप देखिन्छ । समाज र परिवार जहाँ हुन्छ, त्यहीं चुक्ली गर्ने, षड्यन्त्र गर्ने चुगलाजस्ता पात्र हुन्छ । कठपुतली नृत्यको आभास दिने यो पर्वमा डोरीले हैन, हातले सञ्चालन हुन्छ र महिला सूत्रधारका रूपमा जीवनका गाथा लोक धुनको आधारमा गाउँछिन् जसमा अपूर्व र विशिष्ट शैलीको जनजीवनकै उद्देग प्रवाहित भइरहेको हुन्छ ।

नेपाल संवत्, यसको गरिमामय इतिहास र वर्तमान अवस्था

नेपाल संवत् अन्तर्राष्ट्रिय जगतै आफ्नो देशको पहिचान बोकेको एकमात्र संवत् हो । नेपाल संवत् नामैले देशको पहिचान दिन समर्थ छ । विश्वमा अरु कुनै पनि त्यस्तो संवत् प्रचलनमा भएको देखिँदैन, जसले देशको नामबाटै आफ्नो संवत्लाई चिनाएको होस् । त्यसैले, नेपाल संवत्ले सिङ्गो नेपालको राष्ट्रिय स्वाधीनता, एकता र राष्ट्रियतालाई आफूभित्र समेटेको छ भन्दा अत्युक्ति हुँदैन ।

नेपालमा धेरै संवत् प्रचलनमा आएका भेटिन्छन् । इस्वी (ग्रेगोरियन), शक, मानदेव, विक्रम, हेबर, हिजरी, चिनियाँ, कलिंगतलगायत अरु थुप्रै सम्वत् हामीकहाँ चलनचल्तीमा देखिन्छन् । नेपालभित्र प्रचलनमा रहेका जति पनि संवत्हरू हामी देख्दाँ, नेपाल संवत्ले ती संवत्हरूभन्दा भित्र देखिँहास र भावना बोकेको पाउँछौं । नेपाल संवत् जति जनस्तरमा व्याप्त छ, चर्चित छ र राष्ट्रिय संस्कृतिसँग अभिन्न रूपमा गाँसिएको छ, अरु संवत् त्यस्तो देखिँदैन ।

नेपाल संवत् नेपालको चाडपर्व लगायत जन्मदेखि मृत्युसम्मका सम्पूर्ण संस्कारहरूको मुख्य आधार हो । यस संवत्मा तिथिमितिदेखि यावत् कुराहरू व्यवस्थित छन् । कतिपय यस्ता संवत्को चर्चा पनि हुने गर्छ, जसको वर्ष गणना भए पनि तिथिमिति देखिँदैन । बुद्ध संवत्, यले संवत् यसका उदाहरण हुन् । यसमा तिथिमिति देखिँदैन । नेपाल संवत् नै एक मात्र यस्तो संवत् हो जुन जनस्तरमा आजपर्यन्त सर्वस्वीकार्य भई प्रचलनमा रहिआएको छ ।

इतिहास केलाएर हेर्दा विसं १८२५ (नेपाल संवत् ८८८) मा गोरखाका राजा पृथ्वीनारायण शाहले आफ्नो राज्य विस्तार गरी तत्कालीन नेपालमण्डल, जसभित्र कान्तिपुर, ललितपुर, भक्तपुर र द्वाल्खा चारवटा स्वायत्त राज्य थिए, त्यसमध्ये कान्तिपुर विजयपश्चात् क्रमशः अरु राज्यहरू पनि आफ्नो नियन्त्रणमा लिए । लिच्छविकालमा नेपाल उपत्यका र वरिपरिको भूभागलाई नेपालमण्डलको नामले पुकारिन्थ्यो । नेपालमण्डल शब्दको प्रयोग नेपालमा तत्कालीन दक्षिण एसियामा प्रचलित महाजनपद राज्यहरूजस्तै सङ्घीय नेपाल भन्ने अर्थमा प्रयोग भएको देखिन्छ । त्यतिबेला नेपालमण्डल पाँचवटा राज्यहरूको सङ्घराज्य थियो । तत्कालीन कान्तिपुर, ललितपुर, भक्तपुर, बनेपा र द्वाल्खा विभिन्न कालखण्डमा अस्तित्वमा आए र यसको सङ्घीय स्वरूप नेपालमण्डल थियो । बनेपा राज्य भक्तपुरमा गाँभिएपछि त्यो चारवटा राज्यको सङ्घ थियो । नेपाल संवत् नेपालमण्डलभरि प्रयोगमा थियो । गोर्खा राज्य विस्तारको माध्यमबाट आजको आधुनिक नेपालको स्थापना गरेपछि नेपाल संवत्लाई हटाएर शक संवत् प्रयोगमा ल्याउने काम भयो ।

नेपालमा शक संवत् दुईपटक प्रयोगमा आए । पहिलोपटक लिच्छवि कालमा शक संवत् प्रयोग भयो, पछि फेरि शक संवत् हटेर मानदेव संवत् र त्यसपछि नेपाल संवत् प्रयोगमा ल्याइएको देखिन्छ । दोस्रोपटक वर्तमान आधुनिक नेपाल निर्माणपश्चात् पृथ्वीनारायण शाहले पुनः शक संवत् प्रयोगमा ल्यायो । वर्तमान भारतको स्थापनापूर्व त्यहाँ इन्ड्रे ४६५ वटा रजौटा राज्यहरू थिए । त्यसमध्येका विभिन्न राज्यहरू वज्जी, लिच्छवि, गुजराथ, मेवाड, चितौड आदिमा शक संवत् चल्दथ्यो । यसरी पुनः शक संवत् प्रयोगमा आउनाका कारण केलाउँदा पृथ्वीनारायण शाहले आफ्नो पुख्र्यौली राज्यमा प्रचलित संवत् भित्र्याएको देखिन्छ ।

प्यतिबेला नेपालको आफ्नै नेपाल संवत् अस्तित्वमा आइसकेको थियो । नेपाल संवत् फेरि शक संवत्कै परिमार्जित र विकसित रूप पनि हो । किनकि नेपालको तिथिमिति र चाडपर्वलाई निरन्तरता दिने मात्त हैन त्यसलाई क्रमबद्ध रूपमा मनाउने पद्धति यसमै निहीत छ । जस्तै नेवा: समुदायले मनाउने मोहनी अरु समुदायले मनाउने दशैं वा दशहराभन्दा अलि भिन्न छ । नेवारहरूले कुछि भय्च, स्मिन्क्रःत्याक्ः, चाँल (अर्थात् अष्टमी, नवमी र दशमी) मनाउँछ, जुन आदि कालदेखि नै क्रमबद्धरूपमा मनाउने चलन थियो र छ । स्वन्तिदीपावली (बिहार) भनेर लगातार तीन दिन तीन

वटा तिथिमा लगातार मनाउने चलन चलि रहेको छ । नेपाल संवत् अनुसार नेवा: समुदायले लक्ष्मी पूजा वर्षको अन्तिम दिनका रूपमा मनाउँछन् । त्यस दिन विशेष गरी वर्षभरिकै हिसावकिताबको फरफारक गर्ने काम हुन्छ । लक्ष्मी पूजा गरेर धनको देवता मानेर धनधान्यले पूर्ण होस् भनेर आराधना गर्ने गरिन्छ ।

भोलिपल्ट नैवाः समुदायले म्ह पूजा (आत्मपूजा) गर्छन् । यसमा मन्द बनाएर आफ्नो शरीरलाई पूजा गर्ने गरिन्छ । मन्दःमा धान (वा), लावा (ताय्), आखे, गेडा मास (ग्वमाय्) कालो भट्मास (हाकुमुस्या) लगायतका खाद्यवस्तुलाई समेत राखी पूजा गरेर सुस्वास्थ्य र दीर्घायुको कामना गर्ने गरिन्छ । त्यसरी नै बिमिरा, ओखर, बदाम आदिलाई पनि पूजा गर्ने चलन छ । नेपाल संवत्को प्रारम्भपछि दोस्रो दिन किजापूजा (भाइटीका) मनाइन्छ । त्यस दिन वसुधैव कुटुम्बकमको मान्यताअनुसार भातृत्वभाव प्रदर्शन गर्दै दिदीबहिनी दाजुभाइ एक आपसमा माया र खुसी साट्छन् । यस्तो परम्परा नेपाल संवत् प्रारम्भ हुनुभन्दा अगाडि नै भए पनि यसलाई पछि नेपाल संवत् प्रारम्भ गर्दा म्ह पूजाकै दिनबाट नयाँ वर्ष सुरुआत गरिँदा सुनमाथि सुगन्ध भनेजस्तै भयो ।

पृथ्वीनारायण शाहबाट आधुनिक नेपाल निर्माण भएपछि जुन कारणले हटाइ सकेको शक सम्बन्ध नेपालमा पुनः चलाएपछि राणाहरूले सत्ता हातमा लिएपछि त्यसैको हुबहु नक्कल गरेर शक संवत् हटाए र वि.सं. १९६२ (नेपाल संवत् १०२६) मा तिनीहरूले पनि आफ्नै पुर्खासँग जोडेर विक्रम संवत् भित्र्याए । नेपालमा राणा शासन सुरु भएपछि जनताका राजनीतिक र आर्थिक अधिकार मात्रै होइन, सांस्कृतिक अधिकारहरू पनि थप हनन भए ।

नेपालको इतिहासका जानकारी सबैलाई थाहा छ, जंगबहादुर राणा नभई कुँवर थरका थिए । राजकूलका भारदार रहेका उनले कोत पर्व गरी सत्ता हातमा लिएपछि आफ्ना पुर्खाहरू तत्कालीन उज्जैन राज्यको राणाखलक भएको बताउँदै त्यहाँका राजखलकसँग नाता जोडेर कुँवरबाट राणा बने । चन्द्र शमशेरको पालामा आएर तत्कालीन उज्जैन राज्यमा प्रचलित विक्रम संवत्लाई नेपालमा प्रचलनमा ल्याउने घोषणा गरे । यदि राणाहरूमा राष्ट्रियताको भावना भएको भए नेपाल संवत्लाई नै पूर्ण प्रयोगमा ल्याउन सक्ये ।

नेपालमा विक्रम संवत् चलाउनुपर्ने पक्षमा तर्क दिँदा अघि सार्ने एउटा मुख्य तर्क त्यतिबेलासम्म नेपालमा प्रचलनमा रहेका संवत्हरू तिथिमा आधारित भएकाले प्रत्येक ४ वर्षमा १२ महिनाको सट्टा १३ महिना हुने हुँदा अतिरिक्त एक महिनाको तलब भत्ता बढी खुवाउनु पर्ने बाध्यता हो भन्ने गरेको छ । तर विक्रम संवत् भित्रिएको बखत त्यस संवत्मा पनि त्यहि समस्या थिए । त्यसैले त्यसमा कुनै सत्यता देखिँदैन । किनभने तत्कालिन समयमा उज्जैनमा प्रचलित विक्रम संवत् पनि तिथि सम्वत् (लुनार क्यालेन्डर) अर्थात चन्द्रमासमै आधारित थिए । नेपालमा भित्रियाइएका बेला श्री ३ चन्द्र शम्शेरले संवत् मात्रै भित्रियाएको नभई केही ब्राह्मण र ज्योतिष पनि भित्रियाए र त्यसमा गते थप निर्देशन दिए । अहिले पनि भारतको राजस्थान राज्यका केही भागहरूमा चन्द्रमासमै आधारित विक्रम संवत् प्रचलनमा छ । अहिले पनि कृष्ण पक्ष, शुक्लपक्ष भन्ने गरिन्छ । त्यहाँ नेपालमा भए थपने कामको निर्णय चन्द्र शमसेरको पालामा गते पनि गते थपेर सरकारी कामकाजमा प्रयोगमा ल्याउने काम भने भीम शमसेरको पालामा भएको कुरा प्रो. माणिक लाल श्रेष्ठले उल्लेख गर्नुभएको छ । यसरी विक्रम संवत् चलाउनुको पछाडि कुनै राष्ट्रिय भावना देखिँदैन । साँच्चै नै राष्ट्रिय भावना वा एकतालाई महत्त्व दिन चाहेको भए नेपाल संवत्सै पनि गते थप सकिन्थ्यो ।

नेपालमा नेपाल संवत् प्रयोगमा ल्याउनु पर्छ भनिरहँदा सबैको मनमा उब्जने प्रश्न भनेको कसरी प्रयोगमा ल्याउने भन्ने हो । त्यसका बारेमा अहिले विभिन्न चर्चा परिचर्चा हुने गरेको छ । पहिलो कुरा नेपालमा यो स्तरीय छैन, वैज्ञानिक छैन भनेर प्रश्रहरू उठाउने गरिएको छ । नेपाल संवत्को ऐतिहासिकता, वैज्ञानिकता र व्यावहारिकताका बारेमा संवत्माथि उठ्ने उठाइने यी सवाललाई हामीले हल गर्न जरुरी छ । हामीले बुझ्नुपर्ने कुरा के हो भने नेपाल संवत् प्रयोगको



■ राजेन्द्रप्रसाद श्रेष्ठ ■

इतिहास गरिमामय छ । यो वैज्ञानिक पनि छ । तर स्तरीय छ कि छैन भन्ने सवालमा वहस हुन सक्दछ । सौर्यमासमा आधारित इस्वी सम्वत् पनि कतिपय देशमा पछि सुधारिएकै हो । रूसमा अक्टोवर क्रान्ति जुलियस सिजरले विकास गरेको संवत् अनुसार अक्टोबर २५ मा भएको थियो । पछि पोप ग्रेगोरीले परिमार्जित गरेका सौर्यमासमा आधारित पात्रोमा मिलाउँदा अक्टोबर क्रान्ति नोभेम्बर ७ मा पर्न गयो ।

सौर्यमासको क्यालेण्डरको सैद्धान्तिक अवधारणा भनेको मेष राशिदेखि १२ राशिको सूर्यको भोगावधि हो, जसको अवधि ३६५.२५ दिन हुन्छ । अर्को भाषामा भन्दा पृथ्वीलाई सूर्यको परिक्रमा पूरा गर्न लाग्ने समय ३६५ दिन र ६ घण्टा हो । त्यसैले सौर्यमासको क्यालेण्डर भनेको वर्षमा ३६५.२५ दिनको व्यवस्थापर्न हो । सौर्यमास पात्रो नै भए पनि विक्रम संवत्मा पनि धेरै खोटहरू छन् ।

कुनै सालमा असारमा ३२ दिन हुन्छ भन्ने कुरा निश्चय नहुने भाल होइन, यसमा अधिक वर्ष ११ भइत थबचक कहिले पर्छ भन्ने पनि थाहा हुँदैन । यसको गणना नमिल्दा असोजमा मनाउनुपर्ने चाडपर्वहरू समेत कार्तिकमा पर्न थालि सक्थ्यो । असारे गीत जेठमा गाउनुपर्ने भइसक्यो । त्यसैले विक्रम संवत् सुधारका अभियन्ताहरूले अव चाड पर्वहरू १ महिना अगाडी सार्नुपर्ने बताउन थालेका छन् । उहाँहरूको तर्कअनुसार विक्रम संवत् २४ दिन ढीला भइसकेका छ । यसरी हेर्दा सौर्यमासको क्यालेण्डरमा पनि सुधार आवश्यक छ ।

अर्को कुरा चन्द्रमासको तिथि संवत्मा सौर्यमासको गते थप्दा आउने समस्याहरू पनि जुँका लुँ छन् । विक्रम संवत्मा चन्द्रमासको तिथिसँगै सौर्यमासको गते थपेर प्रयोग गर्दा यस संवत्मा कुनै वर्ष चैत दसैँ नै नहुने, कुनै वर्ष २ पटक चैत दसैँ पर्ने समस्या पनि छ । त्यहि भएर होला सायद भारतले सरकारी कामकाजमा इश्वरी संवत् प्रयोग गर्ने गरेको छ । चीनले पनि आफ्नो राष्ट्रिय संवत्मा सौर्यमासको तरिख वा गते नथपी इश्वरी संवत् नै प्रयोग गर्ने गरेको छ ।

प्रत्येक ४ वर्षमा १२ महिनाको सट्टा १३ महिना हुने अधिक मासको समस्या त कुनै पनि चन्द्रमासको क्यालेण्डरमा हुन्छ नै । यसको कुनै हल निकाल्न सकिँदैन । किनकि चन्द्रमासको क्यालेण्डरको सिद्धान्तिक अवधारण सौर्यमासको भन्दा फरक छ । चन्द्रमा पृथ्वीको एक मात्र उपग्रह हो । यसले सूर्यको विपरीत पृथ्वीको फन्को मार्दछ । यसले हरेक २७.३ दिनमा पृथ्वीको परिक्रमा पुरा गर्छपैथ्वीको गुरुत्वाकर्षण शक्तिले चन्द्रमालाई प्रभाव पारिरहेको हुन्छ ।

प्रत्येक २९.५ दिनमा चन्द्रमा पुनः यथास्थितिमा फर्किन्छ । चन्द्रमासको संवत् चन्द्रमाको यहि घुमे चालमा आधारित हुन्छ । यसरी हेर्दा १ वर्षमा २९.५ गुणा १२ बराबर ३५४ दिन हुन्छ । त्यसैले प्रत्येक ४ वर्षमा अधिक मास हुन्छ । यो कुरा विज्ञानसंगत कुरा नै हो । यहि कारणले प्रायजसो देशहरूमा सरकारी कामकाजमा चन्द्रमासको संवत् भन्दा सौर्यमासको संवत् प्रयोग हुन थालेको हो ।

चीनमा आफ्नो चिनियाँ क्यालेण्डर भएपनि उनीहरूले आफ्नो चाडपर्वमा मात्र प्रयोग गर्ने गरेका छन् र सरकारी कामकाजमा इस्वी संवत् नै प्रयोग गर्छन् । भारतमा शक संवत्, विक्रम संवत् लगायत थुप्रै संवतहरू छन् । भारतले शक संवत्लाई आफ्नो राष्ट्रिय संवत्को मान्यता दिएको छ तर सरकारी कामकाजमा इस्वी संवत् नै प्रयोग गर्ने गरेको छ । नेपालमा सौर्यमास थपेर विक्रम संवत् चलाए, तर यो वैज्ञानिक र स्तरीय देखिंदैन ।

आजभोली नेपाल संवत्मा पनि सौर्यमास
क्यालेन्डर निकाल्न थालिएको छ । त्यसमा

प्रेगोरीयन क्यालेन्डर जस्तै प्रत्येक ४ वर्षमा छैटौँ महिना अर्थात् चउला (महिना) मा १ दिन थपी अधिक वर्ष मिलाइएको छ । त्यसअनुसार नेपाल संवत्को पहिलो पाँच महिना अर्थात् कछला, थिला, गदैं चिल्ला सम्मको पाँच महिना ३० दिन हुने, छैटौँ महिना अर्थात् चउलामा प्रत्येक वर्ष २९ दिन र ४ ले भाग जाने प्रत्येक वर्ष ३० दिन हुने र सातौँ महिना बछला, तछला गदैं कौलासम्म ३१ दिन हुने प्रबन्ध गरेको छ । यसरी पहिलो ५ महिनाको १५० दिन, छैटौँ महिनाको २९ दिन र पछिल्लो ६ महिनाको १८६ दिन गरेर ३६५ दिन हुन्छ । अब ४ वर्षमा एकचोटि चौला महिनाको २९ लाई ३० गरिन्छ, त्यसो गर्दा ३६६ दिन हुन्छ । यसै हिसाबले प्रत्येक चार वर्षमा त्यसलाई व्यवस्थित गरेर जान्छ । यो गर्नुपर्नाको कारण सूर्यलाई पृथ्वीले परिक्रमा गर्दा लाग्ने ३६५.२५ को जुन पद्धति छ, त्यो अधिक ०.२५ लाई मिलाउन चौथो वर्ष एकदिन बढाइएको हो । यसरी नेपाल संवत्लाई सौर्य मासमा आधारित बनाएर लाने प्रयास भएको छ । नेपाल संवत्को सौर्यमास प्रणाली पछिल्लो विज्ञान र प्रविधिको प्रयोग गरी विकास गरेकाले विक्रम संवत्भन्दा वैज्ञानिक र स्तरीय देखिन्छ । यसलाई कतिपययसो व्यवसायीहरूले आफ्नो आन्तरिक कामकाजमा प्रयोग गर्न पनि सुरु गरेका छन् ।

नेपाल संवत्को वैज्ञानिकताको जुन सवाल छ, त्यसमा नेपाल संवत्मा वैज्ञानिकता छैन भनेर कसैले पनि भन्न सकिने आधार छैन । विज्ञानले कारण र परिणामको माग गर्छ । चन्द्रमास पद्धतिअनुसार यसका तिथि तय हुन्छ । नेपाल संवत्को पातो निर्धारण गर्ने विश्वहरूद्वारा जुन दिन सूर्यग्रहण हुन्छ भनेका हुन्छन्, त्यो दिन सूर्यग्रहण भएकै छ, जुन दिन चन्द्रग्रहण हुन्छ भनेका हुन्छन्, त्यो दिन चन्द्रग्रहण भएकै छ । त्यस्तै पूर्णिमाको दिनमा झलमल्ल जुन लागेकै हुन्छ र औंशीको दिन रात अन्धकार भएकै छ । नेपाल संवत्मा तिथिमितिहरू प्रयोग गर्दा हाम्रो देशको संस्कृति, रितिथिति र परम्पराअनुसार चाडपर्वहरूमा तिथि टुट (तुथ) नहुने गरी क्रमशः मनाउने, घडी पला नहेरी दिनभरी एउटै तिथि प्रयोग गर्ने जस्ता सौर्यमासका विशेषताहरूलाई चन्द्रमासकै तिथिमा समायोजन गरी नेपाल संवत्को तिथि प्रयोग गर्ने प्रचलन छ । यस्तो प्रवन्ध विक्रम संवत्मा छैन । त्यसैले आजभोली स्वन्ति (तिहार वा तिहार= लगातार तीन दिन) हुनुपर्ने कहिले एउटै तथि दुई दिन पारी निम्ति (दुईद्वार) कहिले घडी पला हेरी तिथि टुट भन्दै चार दिन पारी प्यन्ति (चारहार) हुन थाल्यो । यसपटक त सुरु र अन्त्य हिसाव गरी स्वन्ति (तिहार) ५ दिन हुन गयो । नेपाल संवत् प्रयोग गर्दा यस्तो समस्या नहोस भन्नाका लागि नै शक संवत्को तिथिमितिहरूमा आवश्यक स्तरीकरणसहित यसलाई प्रयोग गरिएको हो भन्ने यसका विश्वहरूको दावा रहेको स्पष्ट छ ।

नेपाल संवत् प्रारम्भ हुनुको पछाडि राष्ट्रियताको भावना, लोकतान्त्रिक आन्दोलनसँग जोडिएका इतिहास र सामाजिक परिवर्तनका सन्दर्भहरू पनि छन् । नेपालमा अरु संवत्हरूको प्रयोगमा यस्तो देखिँदैन । हामीले पञ्चायतकालमा शुभकामना आदानप्रदानको कार्यक्रम राख्दा दमन गरी धरपकड र राज्य आतंक सृजना गरेपछि हामी पञ्चायत व्यवस्थाविरुद्ध जानैपर्ने स्थिति बन्यो । हामीले लोकतान्त्रिक आन्दोलनसँग जोडेर यसलाई अगाडि बढायौं ।

राष्ट्रियताका भावना त यो संवत्संग जोडिएको छ । यसको नामले त्यसलाई प्रतिविम्बित गर्छ र अन्तर्राष्ट्रिय समुदायमाझ पनि चिनिएकै छ । संयुक्त राष्ट्र संघमा नेपालले सदस्यता प्राप्त भएको बखत भामरतको भन्त्ला फरक नेपालको मौलिकता झल्काउने माध्यमको रूपमा यहाँको मौलिक संस्कृति, लिपि, संवत् आदि प्रस्तुत गर्नुपर्ने परिस्थिति सृजना भएको थियो । त्यसको एउटा साधन संवत् पनि थियो । नेपालमा लोकतन्त्र बहाली भई २०१५ सालको पहिलो आम निर्वाचपश्चात् २०१६ सालमा विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला प्रधानमन्त्री भए । त्यसपश्चातको लोकतान्त्रिक वातावरणमा संयुक्त राष्ट्र संघका साथै विभिन्न कूटनीतिक नियोगहरूमा नेपाली प्रतिनिधिहरूको पहलमा नेपाल संवतको पहिलो दिन 'नेपाल डे' भनेर मनाउन सुरु भएको थियो । वास्तवमा नेपाल संवतले नेपालको पहिचान स्थापित गर्न मद्दत गरेको पनि थियो । तर

नेपालमा जब नेपाल भाषा मंकाः खलःको स्थापना गरी २०३६ सालबाट नेपाल संवत्को शुभकामना आदानप्रदानको भित्तुना जुलुश कार्यक्रम अगाडि बढाइएपछि त्यसमा केही पूर्वग्रह साँधियो र विविध बहाना बनाएर २०३८ साल (नेपाल संवत् ११०२) तिर आएर संयुक्त राष्ट्र संघ लगायतका कुटनीतिक नियोगहरूमा 'नेपाल डे' मनाउने परम्परा तत्कालीन पञ्चायती सरकारले गङ्ग्यो ।

नेपाल संवत्मा राष्ट्रियताको भावना साथै सामाजिक परिवर्तनको भावना पनि प्रचुर मात्रामा छ । जस्तो कि ऋणमोचन जस्तो लोक कल्याण, सामाजिक न्याय र परोपकारी भावना । आफूले कमाएको सम्पत्तिलाई प्रयोग गरेर सम्पूर्ण जनतालाई ऋण मुक्त बनाएर शंखधर साख्वाःले नेपाल संवत् सुरु गर्‍यो । साख्वाः भन्ने शब्द संस्कृतको साखवालबाट आएको देखिन्छ । इतिहासकार भूवनलाल प्रधानका अनुसार साखवाल भनेको ऋण लिने दिने एउटा आर्थिक कारोवार गर्ने समुदाय हो । यसलाई अंग्रेजी भाषामा क्रेडिटर भन्न सकिन्छ । आधुनिक बैंकिंग प्रणाली सुरु नभएको बेला लेनदेन गर्ने सबै कामहरू यिनीहरूबाटै हुने गर्‍थ्यो । एकजना परोपकारी भावना भएका र व्यापार विनियममा लाग्ने व्यक्तित्वले आफूले कमाएको धनसम्पत्तिबाट ऋणमोचन गरी सम्पूर्ण जनताको ऋणमोचन गरी आर्थिक दासताबाट मुक्त गरेर यो नयाँ संवत् शुरु गरेका थिएका हो । त्यसैले नेपालमण्डलका तत्कालीन मूल राजा राघवदेवले आफ्ना जनताको भलो हुने देखी इस्वी संवत् १७९१ अक्टोबर २० का दिनदेखि सम्पूर्ण तिथिहरू शक संवत् र मानदेव संवत्कै प्रयोग हुने गरी त्यसलाई यथावत नै राखेर कछलाख पारुदेखि यो संवत् सुरु गरिएको देखिन्छ । यी तथ्यहरूले यो संवत्को गरिमामय इतिहास पृष्ट्याउँ गर्छ ।

नेपाल संवतको गरिमामय इतिहासलाई फेरी पनि पुनर्स्थापित गर्नु पर्छ र शंखधर साख्वाःको लोककल्याणकारी भावनालाई अन्तराष्ट्रिय क्षेत्तमा पनि प्रचार प्रसार गर्नु पर्दछ । नेपालमा पनि सबै तहको सरकार र जनस्तरमा यसको प्रयोग गर्नु पर्दछ । यस सन्दर्भमा २०४६ सालको परिवर्तन र २०६२-६३ सालको जनक्रान्तिपश्चात गरिएका निर्णयहरू उल्लेखनीय छन् । तर ती निर्णयहरूको पछाडी नेपाल संवत् आन्दोलन को महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको छ भन्ने कुरा भुल्नु हुँदैन । खासगरी २०५६ (नेपाल संवत् ११२०) सालमा तत्कालिन कृष्णप्रसाद भट्टराईको सरकारबाट शंखधर साख्वालाई राष्ट्रिय विभूति घोषणा गर्नु, २०६५ साल (ने.सं. ११२८ मा निर्णय गरी ११२९ को नूढाँको दिन घोषणा) मा तत्कालिन प्रधानमन्त्री पुष्पकमल दाहाल प्रचण्डद्वारा राष्ट्रिय मान्यताको घोषणा गर्नु र २०८० साल (ने.सं. ११४४) मा सरकारको कामकाजमा प्रयोग गर्ने निर्णय भई कार्यन्वयनमा लानु महत्त्वपूर्ण निर्णय हो ।

त्यसरी नै बागमती प्रदेश सरकार र काठमाडौं, ललितपुर लगायतका केही स्थानीय सरकारहरूले पनि नेपाल संवतलाई प्रयोगमा ल्याइसकेको छ । त्यसैले प्रत्येक नेपालीहरू, जो न्याय, स्वतन्त्रता, समानता र परिवर्तनका हिमायती छन्, सबैले यसमा गर्व गर्नु पर्छ । यसको मुख्य कारणहरूमा: पहिलो, नेपाल संवत् मौलिक संवत् हो । दोस्रो, यो कुनै देवी देवता, धर्मगुरु वा राजा महाराजाको नाममा स्थापित संवत् होइन ।

तेस्रो, यो संवत्सँग जनतालाई आर्थिक दासताबाट मुक्त गराएको गौरवमय जनश्रुति गाँसिएको छ । चौथो, यो संवत् स्थापना भएको बेलाका राजा राघवदेव स्वयं पनि यस संवत्का संस्थापक शंखधर साख्वाःको देशप्रेम, परोपकारी भावना र ऋणमोचनजस्तो पवित्र कार्यबाट प्रभावित भएर यो संवत् प्रचलनमा ल्याउन स्वीकृति प्रदान गरिनु आदि ।

अन्तमा नेपाल संवत्का प्रवर्तक हाप्पा राष्ट्रिय विभूति शंखधर साखाःप्रति हार्दिक सम्मान प्रकट गर्दछु । नेपाल संवत्को नयाँ वर्ष १९४५ भव्य रूपले मनाऔं, राष्ट्रिय एकता प्रकट गरौं । देशभित्र र विदेशमा पैलिपर रहेका सबै नेपालीहरूलाई म हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।

(लेखक नेपाल संवत् २०७३ राष्ट्रिय समारोह समिति
११४५ को अध्यक्ष हुनुहुन्छ)



अमेरिकामा ट्रम्पको दोस्रो इनिङ्ग



अफरोज अर्पण
arpan.afroz786@gmail.com

अमेरिकाका नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्पको नयाँ टोली अब आकार लिन थालेको छ । चुनाव जितेको एक सातापछि ट्रम्पले आफ्नो सरकारमा सामेल हुने करिब एक दर्जन अनुहारको घोषणा गरेका छन् । यी व्यक्तिहरूले आफ्ना कर्मचारी र महत्त्वपूर्ण सरकारी विभागहरूको जिम्मेवारी लिनेछन् । ट्रम्पले पत्कार सम्मेलन र सामाजिक सञ्जालमा जनवरीमा अमेरिकी राष्ट्रपतिको पदभार ग्रहण गरेपछि आफ्नो विशेष ध्यान आप्रवासन र विदेश नीतिमा हुने बताएका छन् । आफ्नो पहिलो कार्यकालको विपरीत, ट्रम्पले आफ्नो दोस्रो कार्यकालको लागि तल्लो तहमा तयारी गरिरहेका छन् । यसका लागि उनले आफ्नो नीतिमा थप स्पष्ट योजना र तयार टोलीसहित काम गर्ने तयारी गरिरहेका छन् । डोनाल्ड ट्रम्पले आफ्नो चुनावी अभियानका क्रममा अवैध आप्रवासीहरूका सम्बन्धमा गरेका वाचाहरू, आफ्नो नयाँ टोलीमा गरेका केही नियुक्तिहरू हेर्दा ती वाचाहरू चुनावी नारा मात्र नभएको देखिन्छ ।



सेवानिवृत्त सेनाका कर्णेल र फ्लोरिडा कांग्रेसका माइक वाल्ट्जलाई रोजेका छन् । यो ह्वाइट हाउसमा विदेश नीतिसँग सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण पद हो । वाल्ट्जले भनेका छन् कि अमेरिका चीनसँग ‘शीत युद्ध’ मा छ । उनी सन् २०२२ को बेइजिङ

हाउस छोडेको चार वर्षपछि लाखौं अमेरिकी मतदाताले आफ्नो समर्थन दिएर ट्रम्पको पुनरागमनको पुष्टि गरेका छन् । उनको चुनावी अभियान पनि इतिहास हो । यस अवधिमा दुई पटक उनको हत्याको प्रयास भएको थियो । उनका मुख्य र

भएको हो ।

ट्रम्पले २०२० को चुनावको नतिजा स्वीकार गर्न अस्वीकार गरेका थिए, जसमा उनी जो बाइडेनसँग पराजित भएका थिए । ती चुनावको नतिजा उल्ट्याउन र अमेरिकी राष्ट्रपतिको पद नछोड्ने उनको प्रयासको आज पनि मूल्याङ्कन भइरहेको छ । ट्रम्पलाई जनवरी ६, २०२१ मा क्यापिटल हिल्समा हिंसाका लागि समर्थकहरूलाई कथित रूपमा उक्साएको आरोप पनि लगाइएको थियो । व्यापार अभिलेख नक्कली गरेको र अन्य केही मुद्दामा दोषी पाइए पनि उनी अमेरिकामा राष्ट्रपतिको पद सम्हाल्ने पहिलो व्यक्ति बनेछन् । डोनाल्ड ट्रम्प किन धेरै ध्रुवीकरण गर्ने व्यक्ति हुन् भनेर बुझ्न गाह्रो छैन । आफ्नो चुनावी अभियानमा, ट्रम्पले बारम्बार भडकाऊ बयान दिए, ठट्टा गरे र आफ्ना राजनीतिक विरोधीहरू विरुद्ध बदला लिने धम्की दिए ।

● ‘अमेरिका फस्ट’ नारा

‘अमेरिका फस्ट’ यी चुनावहरूमा ट्रम्पको नारा थियो जुन वास्तवमा मतदाताहरूसँग सबैभन्दा बढी जोडिएको थियो । देश भरी जताततै युकेनलाई समर्थन गर्न खर्च गरिएको अरबौं डलरको बारेमा मानिसहरूले गुनासो गरेका थिए । मानिसहरूले विश्वास गरे कि अमेरिकाको पैसा अमेरिकामै खर्च गर्नु राम्रो हो । अन्तमा, त्यस्ता मानिसहरूले कमला ह्यारिसलाई भोट दिन सकेनन्, जसले चार वर्ष उपराष्ट्रपतिको रूपमा बिडेनसँग काम गरिन् ।



जनताले कमलालाई निर्वाचित गर्दा बाइडेन र कमला एउटै हो भन्ने सोचेका थिए तर उनी परिवर्तन चाहन्थे ।

सन् २०१६ मा जब ट्रम्प पहिलो पटक सत्तामा आए, उनी राजनीतिक बाहिरी व्यक्ति थिए । केही समयको लागि, ट्रम्पले आफूलाई अनुभवी राजनीतिक सल्लाहकार र अधिकारीहरूले घेरेका थिए जसले आफ्नो कामलाई नियन्त्रणमा राखेका थिए । ट्रम्प अब खेलका नियमहरूद्वारा खेलन इच्छुक छैनन् ।

● जनताको भरोसा जिते

डोनाल्ड ट्रम्पले चुनावी अभियानका क्रममा मतदाताहरूलाई आफ्नो देश असफल राष्ट्र भएको र त्यसलाई फेरि महान बनाउन सक्ने बताएका थिए । यसैबीच कमला ह्यारिसले ट्रम्पले चुनाव जिते भने अमेरिकी लोकतन्त्रको अस्तित्व खतरामा पर्ने चेतावनी दिएकी थिइन् ।

ट्रम्पले रुसी राष्ट्रपति भ्लादिमिर पुटिन र उत्तर कोरियाली नेता किम जोङ उन जस्ता अधिनायकवादी नेताहरूको प्रशंसा गरे । ‘उनीहरू आफ्नो खेलको शीर्षमा हुनुहुन्छ, चाहे तपाईं उसलाई मन पराउनुहुन्छ वा नपराउनुस्’ पुटिन र किमको प्रशंसामा ट्रम्पले भने । उनले प्रेसमा आलोचकहरूलाई चुप लगाउने प्रयासको बारेमा कुरा गरे । निर्वाचनको केही दिनअघि उनले सञ्चारमाध्यमका मान्छे मारिएमा आफूलाई केही फरक पर्दैन भन्ने टिप्पणी पनि गरेका थिए । ट्रम्पले चुनावी प्रचारका क्रममा षड्यन्त्र सिद्धान्त र चुनावी धोधलीको आधारहीन दावीहरू जारी राखे । यद्यपि अन्तिममा उनले चुनाव जिते ।

● आलोचकको आरोप

यीबीचमा उनका आलोचक र केही कर्मचारीहरूले ट्रम्पलाई झूटा, फासिस्ट र अक्षम भने । जब ट्रम्पले पद छोडे, उनले क्यापिटल हिल्स दंगामा उनको भूमिका, राष्ट्रिय सुरक्षा–सम्बन्धित कागजातहरू ह्यान्डल गर्ने र पोर्न स्टारलाई पैसा भुक्तान गर्ने सम्बन्धमा धेरै आपराधिक आरोपहरू सामना गरे । तर सर्वोच्च अदालतले आफ्नो निर्णयमा राष्ट्रपतिलाई पदमा रहँदा कुनै पनि आधिकारिक कार्यका लागि अभियोगबाट पूर्ण उन्मुक्ति रहेको बताएकोले अबको शासनकालमा कुनै पनि अभियोजकका लागि अभियोग लगाउने लडाइँ हुनेछ । संयुक्त राज्यको राष्ट्रपतिको रूपमा, ट्रम्पले आफ्नो न्याय विभागलाई दंगासँग सम्बन्धित संघीय आरोपहरू हटाउन निर्देशन दिन सक्छन् ताकि उसले जेल सजायको बारेमा चिन्ता गर्नुपर्दैन । उनले क्यापिटल हिल्स दंगामा भाग लिएको आरोपमा जेल सजाय पाएका सयौं व्यक्तिहरूलाई पनि माफी दिन सक्छन् ।

ट्रम्पका आलोचकहरूले भनेका छन्, ‘अब अमेरिकी मतदाताहरूले थाहा पाउनेछन् कि ट्रम्पले चुनावी अभियानका क्रममा जे पनि भनेका थिए त्यो बेकारको कुरा थियो ।’

हामीले यो याद राख्न पर्छ कि अमेरिकी मतदाताले ट्रम्पको दोस्रो कार्यकालको वास्तविकताको सामना गर्ने माल होइनन् । ‘अमेरिका फस्ट’ को अर्थ के हो, अब बाँकी संसारले थाहा पाउनेछ । अमेरिकी आयातमा प्रस्तावित २० प्रतिशत व्यापारिको विश्वव्यापी आर्थिक प्रभावदेखि लिएर युकेन–रसिया युद्ध र मध्य पूर्वमा प्यालेस्टाइन र इजरायल युद्ध अन्त्य गर्ने ट्रम्पको वाचालाई के हुन्छ । चीन, भारत, इरान र उत्तर कोरियासँगको अमेरिकी नीति के हुन्छ, उनीहरूसँगको सम्बन्ध कस्तो रहला भन्ने विषयमा ट्रम्पले के गर्ने के गर्छन भन्नेबारेमा विश्वको नजर रहने छ ।

स्टीफन मिलर सन् २०१५ देखि ट्रम्पका नजिकका सल्लाहकार हुन् र उनले आफ्ना भाषणहरू लेख्दै आएका छन् । उनी ह्वाइट हाउसका लागि नीतिहरू बनाउने डेपुटी चिफ अफ स्टाफको पदका लागि ट्रम्पको रोजाइमा परेका हुन् । स्टीफन मिलरले सम्भवतः त्यस्ता मानिसहरूको सामूहिक निर्वासन र संयुक्त राज्य अमेरिकामा अवैध र कानुनी आप्रवासन दुवै घटाउने योजना बनाउनेछन् । ट्रम्पको पहिलो कार्यकालमा, मिलर प्रशासनको सबैभन्दा कडा अध्यागमन नीतिहरू बनाउनमा संलग्न थिए ।

थोमस होमन ट्रम्पको पहिलो कार्यकालमा अध्यागमन र भन्सार प्रवर्तन एजेन्सीको कार्यवाहक निर्देशक थिए । उनले अमेरिका–मेक्सिको सीमामा हिरासतमा रहेका गैरकानुनी आप्रवासीहरूको परिवारलाई अलग गर्ने राष्ट्रपतिको नीतिलाई समर्थन गरे । अहिले उनी सीमासँग सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जिम्मेवारी लिएर फर्किएका छन् । आलोचकहरूले चेतावनी दिएका छन् कि ट्रम्पको सामूहिक निर्वासन योजनाले ३०० बिलियन भन्दा बढी खर्च गर्न सक्छ । तर, गत हप्ता एनबीसी न्युजसँगको अन्तर्वार्तामा नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रम्पले यो विषयमा खर्चको विषय नभएको बताएका थिए । धेरै रूढिवादीहरूले विश्वास गर्छन् कि चीन आर्थिक र सैन्य मामिलामा अमेरिकाको निरन्तर विश्वव्यापी प्रभुत्वको लागि सबैभन्दा ठूलो खतरा हो । जबकि ट्रम्प यस मामिलामा धेरै सतर्क छन् । उनले चीनको आलोचनालाई व्यापारको क्षेत्त्रमा मात्र सीमित राखेका छन् । उनले आफ्नो विदेश नीति टोलीलाई चीनको मुखर आलोचकहरूले भरिरहेका छन् ।

ट्रम्पले आफ्नो राष्ट्रिय सुरक्षा सल्लाहकारका रूपमा

शीतकालीन ओलम्पिक खेलकुदको बहिष्कारको लागि अमेरिकालाई अपील गर्ने कांग्रेसका पहिलो सदस्य थिए ।

ट्रम्पले संयुक्त राष्ट्रसंघका लागि अमेरिकी राजदूतका लागि एलिस स्टेफानिकलाई चयन गरेका छन् । अक्टोबरमा, चीन समर्थित ह्याकरहरूले पूर्व राष्ट्रपति ट्रम्पको फोनबाट जानकारी सङ्कलन गर्ने प्रयास गरेको रिपोर्टहरू बीच, एलिस स्टेफानिकले चीनलाई ‘चुनावमा निर्लज्ज र दुर्भावनापूर्ण हस्तक्षेप’ गरेको आरोप लगाए । यद्यपि ट्रम्पले आधिकारिक रूपमा विदेश सचिवको लागि आफ्नो छनोटको नाम नराखे पनि, मार्को रुबियो, चीनमा नजर राख्ने अर्को सिनेटर, शीर्ष कूटनीतिक पदको लागि प्रमुख दावेदारको रूपमा हेरिन्छ । २०२० मा, रुबियोले हङकङमा प्रजातन्त्र समर्थक प्रदर्शनकारीहरूमाथिको क्रयाकडाउनको लागि चीनलाई सजाय दिने उपायहरूको बारेमा कुरा गरेपछि चिनियाँ सरकारले प्रतिबन्ध लगाएको थियो । व्यापार विवाद र कोविड महामारीको बीचमा ट्रम्पको पहिलो कार्यकालमा अमेरिका–चीन सम्बन्ध प्रायः उथलपुथल भएको थियो ।

ट्रम्पले अमेरिकाको प्रशासनीक खर्चका कटाउन विश्वमा नम्बर एकमा रहेका धनाढ्य एलन मस्कलाई नियुक्त गरेका छन् ।

● अमेरिकाले डोनाल्ड ट्रम्पलाई दोस्रो पटक राष्ट्रपतिमा किन चुन्यो ?

पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प चार वर्षपछि फेरि चुनाव जितेर अमेरिकीको अर्को राष्ट्रपति बन्न लागेका छन् । यो स्पष्ट रूपमा अमेरिकी राजनीतिक इतिहासमा सबैभन्दा नाटकीय पुनरागमन मध्ये एक हो । ह्वाइट

प्रारम्भिक प्रतिद्वन्द्वी, वर्तमान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेनले चुनाव हुनु केही हप्ता अघि आफ्नो उम्मेदवारी छोडे र कमला ह्यारिस डेमोक्रेटिक पार्टीको उम्मेदवार बनिन् । अमेरिकामा महत्त्वपूर्ण चुनावी राज्यहरूमा मतदाताहरूले ट्रम्पलाई मतदान गर्ने निर्णय गरे, जसमा धेरै मतदाताहरूको लागि अर्थव्यवस्था र आप्रवासीहरूको मुद्दा सबैभन्दा महत्त्वपूर्ण थियो ।

● अर्थतन्त्रमा विशेष जोड

जब यो ट्रम्पको कुरा आउँछ, केही व्यक्तिहरूको बीचमा बहस हुन्छ । ट्रम्पले आफ्नो प्रत्येक भाषणमा सोभ्रे गर्दै, ‘के तपाईं दुई वर्ष अघिको भन्दा राम्रो अवस्थामा हुनुहुन्छ ?’

डोनाल्ड ट्रम्पलाई भोट गर्ने धेरै मानिसहरूले भने ‘ट्रम्प राष्ट्रपति हुँदा अर्थव्यवस्था धेरै राम्रो अवस्थामा थियो ।’ यद्यपि, अमेरिकामा मुद्रास्फीतिको पछाडि कोभिड–१९ महामारी जस्ता बाह्य कारणहरू बढी महत्त्वपूर्ण छन्, जसका लागि मानिसहरूले वर्तमान अमेरिकी प्रशासनलाई दोष दिइरहेका छन् । अमेरिकी मतदाताहरू पनि गैरकानूनी आप्रवासीहरूको बारेमा गहिरो चिन्तित थिए, जुन जो बाइडेन राष्ट्रपति रहँदा आप्रवासन बढेको छ ।

ट्रम्प र उनका समर्थकहरूले दावी गरेझैं अमेरिकामा चुनावको समयमा, मानिसहरूले सामान्यतया जातिवादी विचारहरू व्यक्त गरेका थिएनन् वा आप्रवासीहरूले स्थानीय मानिसहरूका घरपालुवा जनावरहरू खाइरहेका थिए भनेर विश्वास गरेका थिएनन् । तर जनता पकै पनि सीमामा कडा निगरानी चाहन्थे । बाइडेनको राजनीतिक विश्वसनीयतामा ठूलो गिरावट आएपछि ट्रम्पको पुनरागमन सम्भव

प्रतिनिधि छनोट गर्न कांग्रेसको बैठक

मधेशदृष्टि वीरगंज ।

नेपाली कांग्रेस पर्साले प्रतिनिधि छनौट गर्ने विषयमा विभिन्न निर्णय गरेको छ । शुक्रबार बसेको बैठकले विभिन्न प्रकारका केन्द्रीय विभागका प्रतिनिधि छनौट गरी केन्द्रमा पठाउने तथा केन्द्रीय पत्र अनुसार १०० दिने कार्यक्रम अन्तर्गत पर्साका सबै वडाहरूमा

जिल्लाबाट प्रतिनिधि पठाउने निर्णय गरिएको छ । साथै पर्साका युवा, विद्यार्थी तथा महिलालाई प्रशिक्षण कार्यक्रम गर्ने तथा स्थानीय तहमा वृहद भेला गर्ने निर्णय समेत गरिएको छ । बैठकमा पर्सा जिल्लाको सभापति जनार्दन सिंह क्षेली, उपसभापति रामनारायण कुर्मी, जिल्ला सचिव इम्तियाज आलम, दिनेश चौधरी, पर्सा

प्रवक्ता एवम् अनुशासन समिति संयोजक रमेश पाण्डे, नेता श्याम पोखरेल, जिल्ला सदस्य धर्मेन्द्र कुमार पटेल, अजय पटेल, परवेज सर्राफ, मन्दु रैनियार, बिवेक चौरसिया, दिना गुप्ता, रुना देवी, विजय गैरी, क्षेत्रीय सभापति लगायत पार्टीका कार्यकर्ताको उपस्थिति रहेको थियो ।

पोखरियामा एमालेका जनप्रतिनिधिबीच छलफल

मधेशदृष्टि वीरगंज ।

नेकपा एमाले पोखरिया नगरपालिकाकोले आयोजना गरेको नेकपा एमाले पार्टीबाट निर्वाचित जनप्रतिनिधिहरूसँग छलफल गरेको छ । शुक्रबार पोखरिया नगरपालिका वडा नम्बर ४ मा रहेको पोखरेश्रवर महादेव मन्दिरको सार्वजनिक धर्मशालामा स्थानीय तहको

समस्याबारेमा छलफल गरेको हो । कार्यक्रमा पोखरिया नगरपालिकाको वडा नम्बर १ देखि १० सम्मका पार्टीका नेता तथा कार्यक्रताहरूले छलफल गरेका हुन् । पोखरिया नगरपालिकाका मेयर प्रधुमन प्रसाद चौहान, उप प्रमुख रूवी कुमारी ठाकुर, वडा अध्यक्ष प्रमोद गिरी, केदार महतो चाई,

रामप्रदेश प्रसाद चौहान, महेन्द्र महतो चाई, वडा सदस्य, कार्यपालिका सदस्यहरूसँग ३० महिनामा भएको कामकाज र विभिन्न गतिविधिहरूको विषयमा छलफल गरिएको थियो । नेकपा एमाले पोखरिया नगर कमिटि अध्यक्ष विन्ध्याचल ठाकुरको अध्यक्षतामा कार्यक्रम भएको थियो ।

वडाध्यक्ष बिगु साहको उपचारका क्रममा निधन

मधेशदृष्टि वीरगंज ।

मिर्गौलापीडित ईशनाथ नगरपालिका–१ का वडाध्यक्ष बिगु साहको उपचारका क्रममा निधन भएको छ । वडाध्यक्ष

साह २०७४ सालको स्थानीय निर्वाचनमा नेपाली कांग्रेसबाट र २०७९ को निर्वाचनमा लोकतान्त्रिक समाजवादी पार्टीबाट निर्वाचित भएका थिए । त्यसैबीच, रौतहट क्षे्ल नं

२ बाट प्रतिनिधिसभामा निर्वाचित सांसद किरणकुमार साहले वडाध्यक्ष साहको निधनप्रति दुःख व्यक्त गर्दै शोकाकुल परिवारजनामा समवेदना प्रकट गरेका छन् ।

बिपिएस कलेजद्वारा कक्षा ११ का विद्यार्थीहरूको स्वागत



मधेशदृष्टि वीरगंज ।

वीरगंज रानीघाटस्थित बिपिएस् प्लस २ कलेटले कक्षा ११ का छात्रछात्राहरूलाई स्वागत गरेको छ । कक्षा ११ मा भर्ना भएका करिब २०० विद्यार्थीहरूलाई शुक्रबार वीरगंजको एक होटलमा मोटिभेसनल ट्रेनिङ तथा स्वागत गरेको हो । कार्यक्रमका प्रमुख अतिथि पर्साका प्रमुख जिल्ला अधिकारी गणेश अर्यालले नव आगन्तुक विद्यार्थीहरूलाई आफूमा नेपालमा टिक्ने र विदेशमा विक्र सक्ने क्षमताको विकास गर्न सृझाव दिए । करिब १ घण्टा सम्बोधन गरेका प्रजिअ अर्यालले विद्यार्थीहरूलाई भने, ‘जीवनमा सफलता प्राप्त गर्न मिहिनेत, त्याग गर्नु पर्छ, निन्द्राको कुरबानी दिनुपर्छ । छनोट तपाईंहरूको हो,

निन्द्राको कुरबानी दिने कि सपनाको ?’, उनले भने, ‘कुनै पनि क्षेत्रमा नर्मल भएर हुँदैन तपाईं युनिक हुनु पर्छ, फरक हुनुपर्छ, अहिले ग्लोबल चुनौति र लोकल अवसरलाई मिलाएर अहिलेको विश्व ग्लोकल भएको छ, तपाईंहरूले सोही अनुसारको आफूमा क्षमताको विकास गर्नुपर्छ ।’ सम्बोधनका क्रममा उनले बिद्यार्थीहरूलाई सफलता प्राप्त गर्ने सुत्रहरूको बारेमा लामो चर्चा गरेका थिए । प्रजिअ अर्यालले बिद्यार्थीहरूले अहिले दुःख गरे भोलीको दिनमा आफ्नो लक्ष्य प्राप्त गर्न सक्ने कुरामा जोड दिए । उनले अहिलेका अभिभावकहरूले आफ्ना छोरा छोरीलाई राम्रो सेवा सुविधा तथा शिक्षाको व्यवस्था गरेको कारण बिद्यार्थीहरूलाई बिग्रिने नरहेको बताए ।

कलेजका शैक्षिक निर्देशक दिपक पटेलको अध्यक्षतामा सम्पन्न भएको उद्घाटन सत्रलाई प्रतिक दैनिक पलिकाका प्रधान सम्पादक जगदिश शर्मा, वीरगंज उद्योग वाणिज्य संघका अध्यक्ष अनिल अग्रवाल, वीरगंज महानगरपालिका शैक्षिक महाशाखाका हरि राउत कुर्मी लगायतकाले सम्बोधन गरेका थिए । उद्घाटन सत्रमा कलेजका प्रिन्सिपल प्रभात मेहता, प्रशिक्षक राजेश मिश्रा, कलेजका एचआर निर्देशक संदिप कुशवाहा, शिक्षक अफरोज हवारी, दिपक खत्री, अंगद यादव, शुभम् पाण्डे, रिणा चौधरी, सुदिक्षा सुवेदी, बिशेष द्विवेदी लगायतको उपस्थिती रहेको थियो । कार्यक्रममा कक्षा ११ मा भर्ना भएका २ सय भन्दा बढी बिद्यार्थीहरूको सहभागीता रहेको थियो ।

सिरहा ।

सिरहाको मिर्चैया नगरपालिका–७ स्थित खोरियाटोलकी चमेली सदायलाई नजिकै रहेको चुनिया खोलामा पानी सुक्दै जानथालेपछि चिन्ता बढेको छ । गाईबस्तुलाई खुवाउने पानीको लागि त्यही खोलामा रसाइरहेको पानीमा आश्रित चमेलीजस्तै यस खोरियागाउँका २६ घरपरिवालाई अब पानीको जोहो कसरी गर्ने चिन्ताले सताएको छ । दैनिक १०÷१५ गाथ्री पानी ओसारने चमेलीले सुक्दै गरेको खोलातर्फ देखाउँदै सिङ्गो हिउँद समय कसरी पानीको समस्या टार्ने जनाउँदै चिन्ता व्यक्त गरिन् । ‘दिनदिनै खोलाको पानी सुक्दै जान थाल्यो । अबको एक÷दुई दिनमा गाथ्रो भर्ने समस्या होला जस्तो छ’, गाग्रोमा पानी भर्दै गरेकी उनले भनिन्, ‘हिउँदको छ महिना पूरै गाउँ काकाकुल हुन्छ । खोला, इनार, कुवा सबै सुक्छन् । मान्छेलेसमेत तिर्ख मेट्ने मुस्किल हुन्छ, बस्तुभाउको के कुरा ।’ चुरेको फेदमा अवस्थित यो गाउँ सुख्खा क्षे्ल भएकोले बर्सेनि खानेपानीको हाहाकार हुने स्थानीयवासी खड्गबहादुर विश्वकर्माले बताए । उनले भने, ‘मङ्सिर नलाग्दै पानीका स्रोत सुक्न थाले । पानीकै चरम अभावले बसाइँ सर्ने अवस्था आइसक्यो । न त अघाउञ्जेल पानी पिउन पाइन्छ, न त कुनै बालिनाली सप्रिन्छ । हाम्रो त उठीबासको अवस्था छ ।’ हिउँद समयमा अधिकांश चुरे क्षे्लका पानीका स्रोत सुक्ने भएकाले दुई घण्टाको बाटो दक्षिणतर्फ धाएर फूलबारियाबाट पानी ओसारनुपर्ने नियती उनले दोहोर्‍याए । दुई दशकदेखि खोरिया गाउँमा बस्दै आएका विश्वकर्माका अनुसार अहिलेसम्म गाउँमा खानेपानी, विद्युत् र सडकसमेत विस्तार भएको छैन । चुनावताका विकासका आश्वासन पाउने गरेपनि सर्धैभरी गरिबी, अभाव र पीडाका जिन्दगी चलिरहेको उनको भनाइ छ । उनले भने, ‘आसैआसमा जिन्दगी जानेभो



हजुर । हामी गरिबको लागि कुनै सरकार रहेनछ ।’ अन्नको नाउँमा परम्परागत कोदो खेतीमाल वर्षमा एक पटक उत्पादन गर्नु यहाँका किसानको बाध्यता हो । अन्य बाली खडेरीले खाने विश्वकर्माको भनाइ छ । खोरियागाउँमा पानीको समस्या बारेमा मिर्चैया नगरपालिका बेखबर छैन । गत आर्थिक वर्ष दुई किलोमिटर दक्षिणतर्फ रहेको मौरहामा मधेश प्रदेश सरकारको स्रोतबाट ‘डिपबोरिङ’ गाड्ने भनी अध्ययनसमेत भइसकेको मिर्चैया ७ का वडाध्यक्ष रामदयाल ठाकुर बराहीले जानकारी दिए । चालु आर्थिक वर्षमा त्यो योजना पूरा गर्नेगरी यस भेगमा अभाव हुने खानेपानीको समस्या समाधान गर्न आँफु लागिपर्ने वडाअध्यक्ष बराहीले प्रतिबद्धता व्यक्त गरे । जलवायु परिवर्तनको असरका कारण चुरे क्षे्लका अधिकांश क्षे्लका कुवा, इनार र खोला सुक्ने हुँदा

नगरपालिकाको माल नभएर देशकै लागि चुनौती बन्दै गएको नगरप्रमुख श्रवणकुमार यादवको भनाइ छ । अधिल्लो वर्षको हिउँद समयमा कतिपय सुख्खा क्षे्लमा ट्याक्टरमा पानी ओसारेर गाउँबस्तीतिर वितरण गरेको स्मरण गर्दै स्थानीयको समस्याबारे आफू जानकार रहेको र समस्या समाधानका लागि पहल गरिरहेको उनी बताउँछन् । ‘नगरपालिकाले चुरेक्षे्ललाई लक्षित गरि यस आर्थिक वर्षमा तीनवटा डिपबोरिङ सम्पन्न गर्ने लक्ष्य राखेको छ, जसमध्ये वडा नं ९ को घुर्मीमा एउता बोरिङ चालु गरिएको छ । अन्य स्थानमा त्यसका लागि प्राविधिक अध्ययन गरिरहेका छौँ, उनले लागिपर्ने वडाअध्यक्ष बराहीले प्रतिबद्धता व्यक्त गरे । त्यसका लागि प्रदेश तथा केन्द्रमा पनि पहल गरिरहेका छौँ । पानीको चरम अभाव रहेका क्षे्ललाई प्राथमिकतामा

राखेर योजना अगाडि बढाउने छौँ ।’ उनले नगरका उत्तरी भेगका खोरिया, रामपुरा, सुन्दरपुर, ननुवा लगायतका बस्तीमा पानीको समस्या देखिएको र अब एकीकृतरूपमा समस्या समाधानको पहल गर्नुपर्नेमा जोड दिए । पछिल्लो समय चुरेक्षे्लमा पानीका सतह गहिरिँदै जाँदा ठूला ‘डिपबोरिङ’ असफल भइरहेकाले यसको विकल्पका बारेमा योजना बनाउनुपर्ने जानकारी बताउँछन् । वातावरणविद् दिनेश यादव भन्छन्, ‘डिपबोरिङ पनि खानेपानी समस्या समाधानकको दीर्घकालीन उपाय होइन भन्ने कुरा अन्य ठाउँका अभ्यासले देखाइसकेको छ । त्यसैले चुरे संरक्षणका साथै यहाँका वन व्यवस्थापन, जलाधार क्षे्ल संरक्षण र नदी कटान नियन्त्रणमा तीनै तहका सरकारले एकीकृत योजना बनाएर कार्यान्वयन गर्नुको विकल्प छैन ।’ रासस

कोदोखेतीले धानेको खोरियागाउँ

सिरहा ।

मिर्चैया बजारबाट १० किलोमिटर उत्तरपट्टि चुरेको फेदमा अवस्थित छ खोरिया बस्ती । बस्तीमा दलित, जनजातिलगायत सीमान्तकृत समुदायका २६ परिवारको बसोबास छ । बस्तीमा सानो झुपडी, फुसको छानो, बाँसका भाटाले बेरेका टहरा छन् । मिर्चैया नगरपालिका–७ मा पर्ने यस गाउँमा जब प्रवेश सुरु हुन्छ, बारीभरि कोदोखेती देख्न सकिन्छ । यहाँका किसानका लागि यो निर्विकल्प खेती हो । वर्षमा एक पटक मात्रै यहाँका किसानले कोदो उत्पादन गर्छन् । चुरेको फेदमा अवस्थित यो गाउँ सुख्खा क्षे्ल भएको र सिँचाइ सुविधा नहुँदा कोदोखेतीको विकल्प नभएको यहाँका किसानको भनाइ छ । ‘बाउबाजेदेखि यही कोदो रोप्दै आएका छौँ । अन्य बालीका लागि सिँचाइको सुविधा छैन । पिउने पानी त नभएर छ महिना समस्या हुन्छ’, स्थानीय हर्कबहादुर परियारले भने, ‘जेजति उब्जनी हुन्छ यही कोदोको जोहो गर्नुपर्ने बाध्यता छ ।’ यतिबेला कोदो पाकेको छ । किसान बाली भित्र्याउने तयारीमा छन् । परियारले दुई कठ्ठा बारीमा कोदो लगाएका छन् । ‘यो अग्टोटे बीउको कोदो आजभोलि नै टिप्ने बेला भइसकेको छ । आफ्नो उत्पादनको दुई गेडा अन्न भए पनि



स्याहारुनु त पर्‍यो’, परियारले भने । उनले उत्पादन गरेको १०÷१२ पाथी कोदोले केही महिना माल जोहो टर्छ, बाँकी महिना ज्याला मजदुरी गरेर छ जना परिवारको जीविका चलाउनुपर्छ । परियारको जस्तै भनाइ छ सोही बस्तीकी धनसरी विश्वकर्माको पनि । खडेरीले अन्य बाली खाने हुँदा आफूहरूले कोदा रोपेर जीविका चलाउनुपरेको उनको भनाइ छ । उनले भनिन्, ‘मान्छे र गाईवस्तुलाई खानेपानीका लागि छ महिना एक घण्टाको बाटो धाएर पानी बोक्नुपर्छ । भएका कुवा र इनार मङ्सिर नलाग्दै सुक्छन् । यस्तो ठाउँमा

कोदोबाहेक अन्य अन्नपात उब्जदैन । मकै रोपे पनि खडेरीले खाइहाल्छ ।’ कोदोबाहेक गहत, बोडी र तिललगायतका अन्नपात लगाउने गरेको उनले जानकारी दिइन् । उब्जने त्यही कोदो बालीमा पनि स्थानीय सरकार तथा अन्य निकायले उन्नत बीउ तथा अनुदान सहयोग नारेको यहाँका किसानको गुनासो छ । उत्तरी भेगका करिब १० प्रतिशत किसानले कोदोखेती गरे पनि नगरपालिले हालसम्म कोदोखेती गर्ने किसानलाई प्रोत्साहन गर्ने कुनै प्रकारको नीति र योजना नरहेको मिर्चैया नगरपालिका कृषि शाखा प्रमुख नागेश्वर हाथीले

बताए । उनले भने, ‘यहाँका किसानलाई कोदोखेती विस्तार र संरक्षणमा सम्बन्धित नगरले अहिलेसम्म कुनै नीति बनाएको छैन । अगामी दिनमा नगरका तर्फबाट किसानलाई कोदो उत्पादनका लागि प्रोत्साहन, बजार व्यवस्थापन र व्यावसायीकरणका लागि सहयोग गर्न पहल गर्नेछौँ ।’ यहाँका कर्जना, मिर्चैया, गोलबजार र धनगढीमाई नगरपालिकाका चुरेफेदका सुक्खा बस्तीका गाउँमा मुख्यगरी कोदोखेती गरिन्छ । कृषि ज्ञान केन्द्र सिरहाका प्रमुख नरेन्द्रकुमार महासेठका अनुसार जिल्लामा

कोदोखेतीमा आकर्षित गर्नुपर्ने आवश्यकता छ ।’ जिल्लाका परम्परागत बालीनालीको संरक्षण गर्नुपर्नेमा उनले जोड दिए । पहिले मुख्य खाना नै कोदाको रोटी, ढिंडो हुने गरे पनि अहिले मुख्य खाना भात भएकाले विभिन्न रोग पनि सँगसँगै आएको खोरिया बस्तीका खड्गबहादुर विश्वकर्माले बताए । उनले भने, ‘गाउँघरमा कोदोखेती विस्थापित हुँदै गएको छ । बजारका अन्य खानेकुराले मानिसलाई रोगी बनाउँदै छ । सरकारले कोदोखेतीको संरक्षणमा ध्यान नर्दिँदा सीमित किसानले आफ्ना लागि आवश्यक पर्ने माल कोदोखेती गर्ने गरेका छन् ।’

२५ जनाद्वारा रक्तदान

मधेशदृष्टि वीरगंज ।

साहस नेपालको आयोजनामा बाराको फेटा गाउँपालिका वडा नम्बर १ तिवेणीमा रक्तदान कार्यक्रम समपन्न भएको छ । तिवेणी धाम मेलाको उपलक्ष्यमा साहस नेपाल र गढीमाई साझेदारी वन व्यवस्थापन समितिको सहयोगमा आयोजना गरेको रक्तदान कार्यक्रममा एक महिलासहित

२५ जनाले रक्तदान गरेका हुन् । रक्तदान गर्नेहरूमा रबिना साह, सुरेश प्रसाद यादव, अर्जुन भुजेल, अम्बिका ठाकुर हजाम, नरेश दास, प्रेम कुमार साह, राम एकबाल प्रसाद साह, बैजु पटेल, जगत नारायण महतो लगायतका रहेको नेपाल रेडक्रस सोसाइटी रेशमकोठी उप–शाखाका युवा संयोजक अमिलाष कुमार गुप्ताले जानकारी दिए ।



गङ्गा नदी आसपासमा भक्तजनको घुईचो: भारत विहार राज्यको राजधानी पटनास्थित गङ्गा नदी किनारमा कार्तिक शुक्ल पूर्णिमाको अवसरमा शुक्रवार स्नान गर्ने श्रद्धालु भक्तजनको भिड । तस्बिर: विश्वनाथ ठाकुर/रासस



कमला नदीमा स्नान गर्नेहरूको भीडः धनुषा र सिरहालाई जोड्ने कमला नदीस्थित बसपट्टा घाटमा कात्तिक पूर्णिमाको अवसरमा शुक्रबार बिहान कमला स्नान गर्ने भक्तजनको घुईचो । तस्विरः अमरेन्द्रकुमार यादव/ रासस

शक्तिपीठमा परम्परागत मेला शुरू

मधेशदृष्टि
वीरगंज ।

पर्सार बारा जिल्लाका विभिन्न सातवटा शक्तिपीठमा बिहीवार बिहानैदेखि कार्तिक पूर्णिमाको अवसरमा परम्परागत मेला शुरू भएको छ । पर्सार जिल्लाको ठोरी गाउँपालिकादेखि पटेर्वासुगौली, जीराभवानी, पर्सगढी र आमोदेवीमाईसम्म पाँचवटा स्थानमा मेला लागेको छ भने, बारा जिल्लाको करैयामाई र कोल्हवी नगरपालिकाका शक्तिपीठमा पनि यही दिन मेला लाग्ने परम्परा छ । पर्सार जिल्लाको शक्तिपीठहरू बाघमोर्चामाई, गादीमाई, सुगीभारमाई, कोइलाभारमाई र

आमोदेवीमाईमा कार्तिक
पूर्णमाको मेला आयोजना
गरिएको हो। मेलामा थारू
समुदायका मानिसहरूले विशेष
उत्साहका साथ सहभागिता
जनाउँदै मन्दिर परिसरमा
अस्थायी बसोबासका लागि
छाप्रो बनाउने प्रचलन रहेको छ
। स्थानीय किंवदन्तीअनुसार,
सातवटै देवीहरू एकै ठाउँमा
रहेका दिदीबहिनी हुन् तर
विभिन्न समयमा यी सात
शक्तिपीठहरूमा विभाजित
भएका थिए। यही
मान्यताअनुसार सातैजना
माईको पूजाको लागि लाखौं
भक्तजनहरू पर्सा, बारा,
रौतहट तथा भारतका विभिन्न
स्थानहरूबाट आउने गर्छन्।

पर्सगढी नगरपालिका वडा नं
३ का वडाध्यक्ष सुकुमान
तामाङका अनुसार, मेलामा
राति विशेष भीड हुन्छ।
कार्तिक पूर्णिमाको दिनमा स्नान
गरी पूजा गरेपछि मधेस क्षेत्रमा
परम्परागत रूपमा मांसाहारी
भोजन सुरु गरिन्छ । यस्तै
बाराको फेटा गाउँपालिका वडा
नम्बर १ मा पर्ने (खैराती माई)
लिवेणी संगम घाटमा गंगा स्नान
गर्ने भक्तजनहरुको घुइँचो
लागेको छ । कार्तिक पूर्णिमा
महिलासम्म मधेसी समुदायमा
नहिँलाहुरेले शाकाहारी
भोजन गर्ने परम्परा रहेको छ ।
मेलाले धार्मिक, सांस्कृतिक
तथा सामाजिक एकता कायम
गर्ने विश्वास गरिएको छ ।

कमला नदीमा बेपत्ता दुई जना
मध्ये एक जनाको शव फेला

मधेशदृष्टि
सिरहा ।

जिल्लाको कमला नदीमा
नुहाउने क्रममा बेपत्ता भएका
दुई जनामध्ये एक जना
मृतावस्थामा फेला परेका छन् ।
अर्का एक जनाको खोजीकार्य
जारी रहेको प्रहरीले जनाएको
छ । शुक्रबार कर्जन्दा
नगरपालिका १
उत्तरवाहिनीस्थित कमला
नदीमा नुहाउने क्रममा डुबेर

बेपता भएका मिर्चैया
नगरपालिका ५ का बिन्देश्वर
मण्डलको छोरा १६ वर्षीय
रोशन मण्डलको शव फेला
परेको हो ।
उनीसँगै हराइरहेका रामनाथ
साहको छोरा १५ वर्षीय लक्ष्मण
कुमार साह भने अझै फेला पर्न
नसकेको जिल्ला प्रहरी
कार्यालय सिराहा जनाएको छ
। कात्तिके पूर्वमा नुहाउन
गएका उनीहरू नुहाउने क्रममा

पानीमा डुबेका थिए ।
प्रत्यक्षदर्शीले प्रहरीलाई खबर
गर्नासाथ इलाका प्रहरी
कार्यालय बन्दिपुर र सशस्त्र
प्रहरी बल मिर्चैयाबाट
खटिएको प्रहरी टोलीले खोज
तलास गर्ने क्रममा नदीमा
तैरिरहेको अवस्थामा फेला
परेको हो । घटनाबारे
अनुसन्धानका साथै बेपत्ताको
खोजीकार्य भइरहेको
जनाइएको छ ।

शिख समुदायले मनाए गुरु नानक जन्मजयन्ती

मधेशदृष्टि
वीरगंज ।

शिव धर्मका संस्थापक गुरु
नानक देवको ५५५ औं
जन्मजयन्ती वीरगंजमा विशेष
धार्मिक कार्यक्रमसहित
मनाइएको छ । प्रत्येक वर्ष
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमाका दिन
मनाइने यस दिवसमा
वीरगंजस्थित गुरुद्वारा
विविध कार्यक्रम गरिएको
छन् । सो क्रममा वीरगंज
महानगरपालिकाका प्रमुख

राजेशमान सिंहले गुरु नानकको मानवतावादी सन्देश आजको युगमा अझै सान्दर्भिक रहेको बताए ।

मधेश प्रदेशका पूर्व मुख्यमन्त्री लालबाबु राउतले गुरु नानकले देखाएको सेवा, परोपकार र समानताको मार्ग पछ्याउँदै अगाडि बढ्नुपर्नेमा जोड दिए । कार्यक्रममा सहभागीहरूले गुरु नानकको शिक्षा स्मरण गर्दै जातिवाद, भेदभाव, र हिंसाको अन्त्यका लागि समाजलाई नयाँ

दिशा दिने प्रतिबद्धता व्यक्त
गरे । कार्यक्रममा
वीरगंजस्थित भारतीय
महावाणिज्य दूतावासका
महानिवाणिज्य दूत देवी सहाय
मीना, नेपाल-भारत सहयोग
मञ्चका अध्यक्ष अशोक वैद्य,
संविधान सभा सदस्य अजय
द्विवेदी, विष्णु पत्तकार
चन्द्रकिशोर झा, सामाजिक
अभियन्ता प्रकाश राहो
लगायतको सहभागिता रहेको
थियो ।

दलहरू केन्द्रीकृत मानसिकताबाट बाहिर आउनुपर्छ: डा राउत

झापा ।

जनमत पार्टीका अध्यक्ष डा
सीके राउतले राजनीतिक
शक्तिहरू केन्द्रीकृत
मानसिकताबाट बाहिर
आउने प्रमुख बताएका छन् ।
उनले अनुसूच दलहरूमा अहिले
पनि पुरानै र केन्द्रीकृत सोच
हाबी रहेको आरोप लगाए ।
यही मइसिर १६ गते हुने
उपनिर्वाचनमा झापाको
कनकाई नगरपालिका-६ मा
जनमत पार्टीका तर्फबाट

उम्मेदवार घोषणा गर्न शुक्रबार
कनकाईको चम्पापुरमा
आयोजित सभामा मुलुकमा
पटकपटक क्रान्तिमार्फत सत्ता
फेरि ए पनि मानसिकता फेरिन
नसकेको बताए ।
अध्यक्ष डा रातले उपडीडित
समुदाय र आमनागरिकले
अनुभूत गर्ने गरी काम गर्न
जरूरी रहेकामा जोड दिए । सो
पाटीका तर्फबाट कनकाई
नगरपालिका—६ मा शुक्लाल
राजवंशीलाई उम्मेदवार घोषणा

गरिएको छ । झापामा जनम
पार्टीले स्थानीय तहक
निर्वाचनमा पहिलोपल्ट भा
लिएको हो ।

निर्वाचन कार्यालय झापाक
अनुसार कनकाई-६ मा दु
हजार ५८ मतदाता रहेका छन्
विसं २०७९ को स्थानीय त
निर्वाचनमा नेकपा (एमाले)बा
निर्वाचित वडाध्यक्ष दीर्घबहादुर
थापाको निधन भएपछि यह
उपनिर्वाचन हुन लागेको हो
रासस

मधेशदृष्टि

वीरगंज ।

सालागायत मधेशका क्षेत्रमा दाजुभाइ तथा दिदीबहिनीप्रति प्रेम र समर्पण दर्शाउने पर्वका रूपमा मनाइने सामाचखेवा समापन भएको छ । कार्तिक शुक्ल पञ्चमीका दिन शुरु भएको यो पर्व पूर्णिमामा समापन गरिने परम्परा छ । यहीँ परम्पराअनुसार सामा खेलेलमा प्रयोग गर्ने सतभैया, हाहाची, वृन्दावन, चुगला, सामा र चखेवाका माटाका आकृति दाजुभाइबाट फुटाउन लगाई फाँटिएको खेत वा निर्जन वनमा गाड्ने चलन छ । पर्व समापनमा अवसरमा दिदीबहिनीले दाजुभाइलाई दिधीघायूको कामना गर्दै मीठा परिकार खान दिन्छन् । यसैगरी दाजुभाइले गाछेअनुसार दिदीबहिनीलाई वस्त्र र नगद दक्षिणा दिन्छन् । सामाचखेवा पर्वका ११ दिन मधेश क्षेत्रमा दिदीबहिनीले



आफ्ना दाजुभाइको सौर्यको
वर्णन गर्दै गीत गाएर मनाइयो
यो पर्व दाजुभाइ
दिदीबहिनीबीच प्रेम र
समर्पणको प्रतीक मानिन्छ ।
बोलीचालीमा 'सामा खेल'
पनि भनिने यो पर्व दिदीबहिनी
र दाजुभाइका लागि आपसी
सद्भाव व्यक्त गर्ने उपयुक्त

अवसर मानिन्छ । पर्वका ११ दिनको मध्यरातसम्म चौबाटोमा समूहमा एकत्र भएर आफ्ना दाजुभाइको पराक्रमको वर्णन गर्दै दुष्ट चरित्रलाई सत्तोसराप गरेर आफूहरूबीच पवित्र र आत्मीय सेह रहेको दर्शाउनु पर्वको मुख्यपक्ष रहेको

जानकारहरु बताउँछन् ।
 गीतमार्फत आफूहरुप्रति
 दिदीबहिनीले दर्शाएका प्रेम र
 समर्पण भावले आफूहरुको
 मनोवल सधैं उच्च रहने
 उनीहरु बताउँछन् ।
 दाजुभाइ दिदीबहिनीप्रति
 यस्तो प्रेम दर्शाउने यो पर्व
 करिब साढे पाँचहजार वर्ष

पहिले द्वापर युगबाट शुरु भएको मानिन्छ । द्वापर युगमा श्रीकृष्णकी छोरी सामाले चक्रधरसँग प्रेम सम्बन्ध राखेको कुरा एउटा कुराैटेले कृष्णलाई सुनाउँदा छोरी स्वच्छन्द प्रवृत्तिकी भएको झोँकमा दुवैलाई सामा र चखेवा हुने आप दिएको पौराणिक कथा छ । श्रीकृष्णका आपले चरा भएर विचरण गरेकी बहिनी सामा र उनका प्रेमी चखेवाको मुक्तिका लागि कृष्ण पुत्र साम्बले शिवजीको तपस्या गरेर पिता रिझाउन सक्ने वरदान पाई कृष्णसँग गरेको याचनाबाट उनीहरु श्रापमुक्त भई पूर्वयोनीमा आएर विवाह गर्न पाएका वर्णन पनि पुराणमा पाइन्छ । दाजु साम्बको त्यही गुनलाई सम्झदै सामाले गाएकी गीतको यादमा दाजुभाइप्रति कृतज्ञता जनाउन सामाचखेवा पर्वको परम्परा बसेको छ ।

कर्जन्हाका पूवमेयर भ्रष्टाचारमा दोषी ठहर



मधेशदृष्टि

सिरहा ।
जिल्लाको कर्जन्हा
नगरपालिकाका पूर्वमेयर गंगा
पासमानसहित ५ जना भ्रष्टाचार
मुद्दामा दोषी ठहर भएका छन् ।
विशेष अदालतले भ्रष्टाचार
मुद्दामा पूर्व मेयर पासमान, प्रमुख
प्रशासकीय अधिकृत जगदीश
मण्डल, अर्का निमित्त प्रमुख
प्रशासकीय अधिकृत बुद्धिमान
दुनुवार, लेखापाल प्रवीणकुमार
महतो र निर्माण कम्पनीका
प्रतिनिधि बैजनाथ यादवलाई
दोषी ठहर गरेको हो । उनीहरूले
नगरपालिकाको प्रशासनिक
भवन निर्माणमा भ्रष्टाचार गरेको
अदालतको टह्र छ । अख्तियार
दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगले

१४ चैत ०८० मा उनीहरूविरुद्ध
आर्थिक हानि-नोक्सानी
पुग्नुपर्‍योको आरोपमा मुद्दा दायर
गरेको थियो । सो मुद्दामाथि
मंगलबार र बुधबारको
सुनवापछि विशेष अदालतका
सदस्यहरू खुसीप्रसाद थारू,
रामबहादुर थापा र मुरारीबाबु
श्रेष्ठको संयुक्तले फैसला
सुनाएको अदालतका सुचना
अधिकारी यज्ञराज रेग्मीले
जनकारी दिए । अख्तियारले
बिगो दाबी गरेको १ करोड ८
लाख रुपैयाँ असुलका लागि
जनही २१ लाख ६० हजार रुपैयाँ
भराउने फैसला पनि गरेको छ ।
सबैको सजाय १० मंसिरमा
निर्धारण गरिने समय अदालतले
तोकेको छ ।

W

गृह मन्त्रालय
अदालत

मधेशहट्टि
वीरगंज ।

स्थानीय तहलाई कर संकलन
नगर्न संघीय सरकारको
गृहमन्त्रालयले गरेको पत्राचारमा
बारा जिल्ला अदालतले कारण
देखाउ आदेश जारी गरेको छ
बाराको महानगरीय
नगरपालिका वडा नं.-५ बस्ने
धिरेन्द्र प्रसाद जयसवालले
जिल्ला प्रशासन कार्यालय

THE

बारालाई विपक्षी बनाई निषेधाज्ञाको माग सहित दिएको निवेदनमा सुनुवाई गर्दै बारा जिल्ला अदालते कारण देखाउ आदेश दिएको हो । निवेदक धिरेन्द्र प्रसाद जयसवालले दिएको निवेदनको सुनुवाई गर्दै बारा जिल्ला अदालतका न्यायधीश जगन्नाथ पौडेलको एकल इजलाशले निवेदकको माग बमोजिम निषेधाज्ञाको

2

आदेश जारी जिल्ला

उ आदेश

आदेश जारी हुनु नपर्ने कुनै कारण, आधार, प्रमाण भए सो समेत खुलाई वाटाका म्याद बाहेक १५ दिन भित्र उपस्थित हुन आदेश दिएको छ । हाललाई छलफल हुने मिति सम्मको लागि निवेदकको ठेक्का अनुसारको कर संकलन गर्ने कार्यमा कुनै किसिमको बाधा अवरोध नगर्नु, नगराउनु पनि अदालतले आदेश दिएको छ ।